Digitized By eGangotri

Digitized By eGangotri

Digitized By eGangotri

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

Digitized By eGangotri

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ कः

Digitized By eGangotri

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

Digitized By eGangotri

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥

[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

Digitized By eGangotri

पृथक्त्वं सृष्टेः स्फुरत्त्वमीशानात् स्पष्टमददृष्टिः सर्वत्र
विस्तृतिः विश्वस्य सत्त्वं यस्य प्रपञ्चस्य पृथक्त्वं स्फुरति त्रिविक्रमत्वेन
सर्वरूपः मे लक्ष्मीपतिः भगवान् सर्वं मां विभेदयति प्रपञ्चे ऽपि
अविकारित्वं मम सत्त्वेन स्मरति सर्वत्र सर्वेषु मम
ऐश्वर्यं स्फुरति विकारयोगः अस्मद्विचारे यस्य
स्थितिभिः नियतिनियोगाभिः सर्वत्र विशेषविचारयितुं सो
ऽयं प्रभुरस्मि ऽहममिदमितिः सर्वत्र विचारकत्वं स्फुरति॥

नमः कमलनाभाय नमस्ते जलशायि-
ने नमस्ते केशवानन्त वासुदेव नमोऽस्तु ते॥

कमलं पद्मं नाभौ यस्य तस्मै नमः॥ जले शयनं यस्य
शेमीति शीलं यस्य ते केशव केशानां नन्दः स्वरूपमेव
ति केशः सर्वस्मिन्नपि अनन्तः प्रतिविम्बितरूपः स्वस्य
समष्टिः सुखं ब्रह्मेति स्वस्मिन् वसनं यस्य सर्वेभ्यः परमपि
वासुदेवः ब्रह्मादिपिपीलिकान्तं ब्रह्माण्डं वसत्यस्मिन्

भू० ली० ३

Digitized By eGangotri

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥

Digitized By eGangotri

गङ्गधयगगायनैभिषधष्करा ँ श्री
ऊनियनिऊविमत्रिदविधुमरूउ
ग्रुयत्रुउनिकरपद्मध्रुटेभमीये ध
क्रलयत्रुवमनभृनिमकलक्ष्मा ॥
मद्भूजः ॥ मङ्गलं ॥ श्रीजैप्रयंश्रीजसेव
ममानन्दवति ॥

पाद्मस्मक्रेयद्गः श्रीजगङ्कुरुहेभ्नुयभिऊविषिः न
त्रगङ्कमीनं कृत्स्मिन्दृष्मिुष्कुर्ष्मिश्रीजहवश्रीजैप्र
यभिउविषिद्विजकुंउमिऊरुद श्रीजसेवऊि ममन
नंउयेनउल्पृनंउयमयनभृउभृणमसहुमास्ति ठ
मेनभिृकनं मङ्गमभस्तउउयंश्रीजसेवठवश्रीह्नजः उ
मृउभागुधग ँ नमीनं वृक्र ँ उयंउज्ञकेन्द्रिये
मकमा वैमृत्कृपगउउयंगढ्ढेठ पेधृमृहकमिउ उष
कमायेठधमेवधश्रीजैप्र नंमभमयेउ मउिकलमृम
मकृहृषमंठवसेववेउि ॥ मरुेरुरा ॥ ॥

भृ:
वि.टी.
५

[illegible] सोमानं स्वरणं कृणुहि ब्रह्मणस्पते ॥

ब्रह्मणस्पतिरृषिः ब्रह्मणस्पतिर्देवता गायत्री छन्दः [illegible]

[illegible] ॥

गायत्र्या [illegible] ॥

Digitized By eGangotri

सम्मतः मन्त्रो विनियोगश्चैतत्कं देवताच्छन्दश्च कर्मयुक्ति
श्चैतेन सकलकर्मफलमश्नुते अन्यथा तु निष्फलमेव कर्म
इति श्रुतेः अत्र यज्ञोपवीतधारणाय उपनयने ... विनियो
गः परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः लिङ्गोक्ता
देवता यज्ञोपवीतधारणे विनियोगः सम्मतः इति ॥ ॥

यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्ता-
दायुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं
यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ॥

देवेभ्यः ... यज्ञोपवीतं यज्ञसूत्रं प्रजापतेः ...
... [illegible] ...
... [illegible] ...
... कीदृशं यज्ञोपवीतं यज्ञेन ...
... [illegible] ...
... [illegible] ...
प्र. ली. ५ ... विकल्प ... ॥ ...
... विमुक्तः ...

Digitized By eGangotri

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

Digitized By eGangotri

[illegible]

𑆨· 𑆓𑆵· 𑇗

[illegible]

[illegible] 𑇆 𑆍𑆮𑆁 𑆩𑆤𑇀𑆠𑇀𑆫 [illegible]

[illegible] 𑆥𑇀𑆫𑆑𑆬𑇀𑆥𑆪𑆠𑆴 𑇆

𑆪𑆘𑇀𑆚𑆾𑆥𑆮𑆵𑆠𑆩𑆱𑆴 𑆪𑆘𑇀𑆚𑆱𑇀𑆪 𑆠𑇀𑆮𑆳 𑆇𑆥𑆮𑆵𑆠𑆼𑆤 𑆇𑆥𑆤𑆲𑇀𑆪𑆳𑆩𑆴 𑇆

𑇄 𑆪𑆘𑇀𑆚𑆾𑆥𑆮𑆵𑆠 [illegible] 𑆩𑆱𑆴 𑆪𑆘𑇀𑆚𑆱𑇀𑆪 𑆠𑇀𑆮𑆳 𑆇𑆥𑆮𑆵𑆠𑆼𑆤 [illegible] 𑆇𑆥𑆮𑆵𑆠𑆁 𑆪𑆘𑇀𑆚𑆱𑇀𑆪 [illegible] 𑆇𑆥𑆤𑆲𑇀𑆪𑆳𑆩𑆴 𑆧𑆣𑇀𑆤𑆳𑆩𑆴 [illegible] 𑆪𑆘𑇀𑆚𑆾𑆥𑆮𑆵𑆠𑆁 𑆪𑆘𑇀𑆚𑆼𑆤 [illegible]

Digitized By eGangotri

वसृष्टवदाविकसृमउेउ विङ्कमक्तठवः श्रद्धंमंहृउमम
भुमपाङ्कमुद्दमृपवीउेनमक्ति नलक्ष यनुक्ले
न उपममीपिपामङ्गेनहृमिवग्रमि उद्गमहृम
मृदुंउहैवलयनयामीतिठवः ॥

ङ्क्रिः ङ्क्रुवः ङ्भ्रः ङ्भ्यः ङ्गनः
ङ्उपः ङ्भउमा ङ्उद्भविउवेषु
ङ्गेमेवसृ पामादिपियेनः पुमेरु
यउ ङ्गुपेहृउीयमेमंउवक्रक्रु
वः मृरेमा ॥ उउिपृ यमः ॥

उक्तं महृहृउिमपृ वंगायत्रीमिरमम ह्रिःपरे
मयउपृ पृ यमः मउसृउे हृरहृमीनमयिमु
ङ्कमेवरमयः मङ्गेपमनामेपृ वसृष्टमिनेक्तः उथ
गायत्रीमुगनयुमुब्दत्रीपाङ्केवम ह्रिमुमुलगात्रीमेवे
उमंमुक्तंमृमहृतः उषिमुपुलपाउेवमङ्गमृमद
समुक्तेपयनः विमुभिरुषिमुक्तेमगायत्रंभविउउथ मे
ङ्कपनयेलपृ विनियेगेहृउउथेउ गायत्रीमिरमङ्गु

श्री·
टी·
7

Digitized By eGangotri

Digitized By eGangotri

[illegible]

Digitized By eGangotri

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

Digitized By eGangotri

नमोऽस्तु । यस्य ... अधिपतिः ... तस्मै नमोऽस्तु । य
... अधिपतिः ... तस्मै नमोऽस्तु । य ... अधिपतिः
... तस्मै नमोऽस्तु । य ... अधिपतिः ... य ...
... तस्मै नमोऽस्तु । य ... अधिपतिः
... तस्मै नमोऽस्तु । य ... अधिपतिः ... नमो
ऽस्तु । य ... अधिपतिः ... नमोऽस्तु । य
... अधिपतिः ... तस्मै नमोऽस्तु । य ...
... तस्मै नमोऽस्तु । य ...
नमोऽस्तु ... तस्मै नमोऽस्तु
... नमोऽस्तु ... ॥

नमोऽग्नये ... नमो रुद्राय नमो ...
ऽय नमो ... नमो भूतपतये नमो नमः ॥

... ...
... ...
... ...
... ... नमोऽस्तु ।

मृ॰ ली॰

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]

Digitized By eGangotri

Digitized By eGangotri

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]

Digitized By eGangotri

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ॥

[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
॥ [illegible] ॥ ॥

[illegible]

Digitized By eGangotri

Digitized By eGangotri

[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]

[illegible]
ली
०३

Digitized By eGangotri

विश्वामित्रऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता [illegible] विनियोगः
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ॥

[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥

Digitized By eGangotri

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible] किं [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ॥

[illegible] भगव[illegible] विष्णु[illegible]
[illegible] पार्थिवः सगुणभक्तिः

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] विष्णु[illegible]
[illegible] पार्थिव[illegible] सगुणभक्तिः
[illegible] सगुण[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

Digitized By eGangotri

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

Digitized By eGangotri

[illegible] ॥

[illegible] परमेश्वरे, परमेश्वर[illegible]
[illegible]
[illegible] किंविशिष्टः [illegible] स्फुरितः [illegible]
[illegible] स्फुरित [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ॥

[illegible]
[illegible] ॥

Digitized By eGangotri

[illegible]

Digitized By eGangotri

Digitized By eGangotri

[illegible]

Digitized By eGangotri

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ॥

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

Digitized By eGangotri

Digitized By eGangotri

[illegible]

[illegible]

[illegible]

Digitized By eGangotri

[illegible] ॥

[illegible]

[illegible] ॥

[illegible] ॥

[illegible]

Digitized By eGangotri

मिविविणैदमि नलमापपउभ्रष्ठलामिक्ष्मिभुग्रू
भुउवभुनेदविधक्रहक्तिधुम्ननेनवयविणेमपविमकमः

विविग्निनभेदत्तः पाभेघ्रुनिम
नलः नमपपानिभवाठवघ्र

॥भुकेभम॥

मक्षुमेवहू देमक्षयउभुंविविग्नि
नवुक्षभेदत्तः भद्दलउहक्षः पाभेपमेवैक्ष

हिउभ्रुउीउिपाभेभ्रुी नवय भ्रुभुनिभननक्षक
क्षुक्षलम कमक्षुवेभि मम्मभ्रुमक्षभव भ्रुक्षहु
उनिपपानिवमक्षुरयक्षुीक्षर भुभुकलू मक्षुवे
उीउिकलू कगीठव भुभुमक्षः कलू वमकेह
ये॥ भ्रुपंपउयेविम्मदे पमप घेणीभदि उत्रेवन
ः भूक्षेमयउा॥ वमलीगायहा॥ महुउवगा ॥ ॥

भ्रुपक्षुवन मवयमभंपउभ्रुक्ति
उभा यामिंउमेदिभेउीक्षंभवपपप

।नउये ॥

Digitized By eGangotri

[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]

[illegible]

Digitized By eGangotri

[illegible]

Digitized By eGangotri

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

प्रथमः।

Digitized By eGangotri

[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

Digitized By eGangotri

सत्त्वप्रमतीरमेव सुखयसुकृत्त्वन यतवत्तीति ठवः य
स्त्व उद्ध्वस्सुखपट्टपार्थविद्दसननिस्सुरसिवसुकृलेकत्त्व
निस्सुननितस्तंस्युयति कमरस्कृस्यसणननिस्स
त्रिस्वसमीनिःतिस्मियना सत्त्वप्रमतीरमेव सुखयस
कसनिष्कसमसत्तु~निस्तु~कमवस्कृपसननिकर
ःतिठवः नत्त्वकसंसत्त्वप्रस्कदस सुखयसुकृस्यस्तनस
स्कुवेस्तृठवत्तीहतस्तुद स्वीरमःति उंयुवाक्स्ली
वयनंणीरसेणीरः विवेकिनःकृनेनसुकृनिस्सुक्स्तस्
ते कवयःतिक्रत्त्वस्नसिनः सतीरननारतस्कुविध
दस्यवृवादिहस्नुनिनःकृनेन मेन्द्रियरुसस्तः मेन्द्रियव
कनिस्युसितिस्युतेः उद्ध्वस्वसुकृलस~कंसुयंनयति
५ सूर्यति कयंनयत्तीहपसयंउद्धिसेय~स्वरसण
ननिस्नयति सदृःति सुसेठनंसात्रिपदवसायि
यत्त्वसुतयस्तुणिरहनेसितुनंस्नुनसणनंस स्युवल
स्युस्युसासिविदितंकसयेयंत यद्दस्युसेकनयत्त्वस
गूविषसिवपरि~सेसतेपससिसतिनयेनपरि~
सेसुठसयितुसणित्त्वपीह्वरैरयूलसा~क रि

मू॰
ली॰
१०

Digitized By eGangotri

𑆢𑆴𑆑𑆱𑇀𑆪𑆴𑆑𑆼𑆟𑆳𑆥𑇀𑆪𑆤𑇀𑆪𑆥𑆾𑆪𑆼𑆰𑆁𑆠𑆢𑆴𑆠𑆴 𑆠𑆱𑆳𑆤𑆴𑆱𑇀𑆑𑆩
𑆮𑆭𑆱𑇀𑆪𑆩𑆳𑆑𑆴𑆮𑆴𑆢𑆴𑆠𑆥𑆢𑇀𑆩𑆩𑆳𑆬𑆤𑆠𑆠𑇀𑆱𑆁𑆪𑆾𑆤𑆼𑆤 𑆪
𑆰𑆁𑆱𑆁𑆱𑇀𑆫𑆪𑆁𑆱𑇀𑆪𑆪𑆱𑇀𑆮𑆵𑆑𑆸𑆠𑆪𑆰 𑆠𑆼𑆤𑆩𑆥𑆴𑆪𑆮𑆑𑆳𑆫𑆵
𑆬𑆵𑆮𑆑𑇀𑆫𑆤𑆩𑆳𑆥𑆴𑆑𑆳𑆴 𑆱𑆤𑇀𑆢𑆪𑆠𑆵𑆠𑆴𑆟𑆮𑆂 𑆤𑆠𑇀𑆪𑆳𑆑𑆴
𑆠𑇀𑆱𑆪𑆱𑇀𑆮𑆵𑆑𑇀𑆫𑆠 𑆱𑆫𑇀𑆮𑆼𑆰𑆱𑇀𑆮𑆵𑆑𑆳𑆫𑆁𑆟𑆮𑆳𑆤𑆮𑆱𑇀
𑆑𑇀𑆫𑆼𑆤𑆩𑆴𑆰𑇀𑆫𑆱𑆢𑆴𑆟𑆁𑆱𑆱𑇀𑆤𑆴𑆫𑆳𑆑𑆳𑆫𑆴𑆠𑆩𑆼𑆤𑇀𑆢
𑆮𑆁 𑆑𑇀𑆫𑆾𑆪𑆠𑆱𑆪𑆢 𑆩𑆤𑆩𑆳𑆱𑆼𑆮𑆪𑆠𑆢𑆴𑆠𑆴 𑆩𑆤𑆩𑆳𑆠𑇀𑆫𑆂𑆑𑆳𑆬
𑆩𑆴𑆱𑆟𑆩𑆬𑆑𑇀𑆫𑆤𑆱𑆼𑆮𑆪𑆠𑇀𑆫𑆮𑆢𑆠𑇀𑆫𑆱𑆟𑆱𑆼 𑆪𑆢𑆵𑆥
𑆱𑆑𑇀𑆫𑆼𑆤𑆟𑆁𑆱𑆱𑇀𑆫𑆁𑆱𑆟𑆮𑆱𑆰𑆳𑆥𑆴𑆱𑆫𑆮𑆼𑆟𑆳𑆱𑆑𑇀𑆮
𑆭𑆼𑆑𑆤𑆳𑆬𑆥𑇀𑆪𑆑𑆪𑆳𑆑𑆴𑆱𑆟𑆱𑆁𑆱𑆮𑆬𑆱𑇀𑆫𑆮𑆢𑆠𑇀𑆫
𑆱𑆱𑇀𑆠𑇀𑆫 𑆅𑆠𑆴𑆱𑆵𑆱𑇀𑆫𑆩𑆳 𑇅 𑆪𑆢𑆳𑆱𑆓𑆠𑆥𑆥𑆁𑆬𑆤𑇀𑆩
𑆠𑇀𑆫𑆑𑆁𑆠𑆱𑆪𑆠𑆵 𑆠𑆼𑆱𑆢𑆱𑇀𑆮𑆑𑆬𑇀𑆥𑆳𑆱𑇀𑆫𑆴𑆱𑆢𑇀𑆤𑆼𑆤𑆮𑆼𑆱𑇀
𑆮𑆴 𑇅 𑆱𑆢𑇀𑆮𑆫𑆂 𑇅 𑆅𑆠𑆴𑆯𑇀𑆫𑆵𑆤𑆮𑆴𑆣𑆴𑆩𑆬𑆵𑆑𑆩𑆩𑆳𑆪𑆵𑆠𑇀𑆫
𑆃𑆱𑇀𑆠𑆟𑆩𑆳 𑇅 𑆓𑆾𑆮𑆴𑆤𑇀𑆢𑆼𑆠𑆴𑆱𑆫𑇀𑆮𑆱𑇀𑆮𑆁𑆓𑆾𑆮𑆴𑆤𑇀𑆢𑆼𑆠𑆴𑆱𑆫𑇀𑆮𑆪𑆥𑆂
𑆓𑆾𑆮𑆴𑆤𑇀𑆢𑆼𑆠𑆴𑆱𑆫𑇀𑆮𑆁𑆱𑆫𑇀𑆮𑆓𑆾𑆮𑆴𑆤𑇀𑆢𑆑𑆵𑆫𑇀𑆠𑆤𑆩𑇆 𑆓𑆾𑆮𑆴𑆤𑇀𑆢𑆓𑆾
𑆮𑆴𑆤𑇀𑆢𑆢𑆼𑆮𑆱𑆫𑆳𑆪 𑆓𑆾𑆮𑆴𑆤𑇀𑆢𑆓𑆾𑆮𑆴𑆤𑇀𑆢𑆪𑆰𑆑𑇀𑆫𑆥𑆳𑆬 𑆓𑆾𑆮𑆴𑆤𑇀𑆢𑆾

Digitized By eGangotri

𑆪𑆳𑆢𑆸𑆯𑆁𑆥𑆶𑆱𑇀𑆠𑆑𑆁𑆢𑆸𑆰𑇀𑆛𑇀𑆮𑆳 𑆠𑆳𑆢𑆸𑆯𑆁𑆬𑆴𑆒𑆴𑆠𑆁𑆩𑆪𑆳 ॥ ✤ ॥

𑆯𑆶𑆨𑆩𑆱𑇀𑆠𑆶𑆱𑆫𑇀𑆮𑆘𑆓𑆠𑆳𑆩𑇀 ॥

प्र॰
ली॰
११

Digitized By eGangotri

Digitized By eGangotri

ओं स्वस्ति ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ओं श्रीभद्रकाल्यै नमः ॥

[illegible]

[illegible]

योगः विशेषण नियोगः प्रकीर्तितः प्रकर्षेण सन्निष्ठः
कीर्तितः ॥

प्रत्यते वृन्दायः प्रवसृपरमेश्वरः ह
सुश्लैवसमस्तस्य स्वरूपमक्षरमेमिति ॥

सर्वः प्रसः सर्वेषु वृन्दस्यति परलयतीति प्रत्यपतिः ।
स्वरूपम् विशेषेण कृतिर्नदर्वं सर्वेषां स्वरूपंय
ठिसु तत्रयस्मृष्टकृतयः तत् प्रवसृ प्रवसवप्रा [illegible]
रतनसृ परित्रूष्म लक्ष्मीदसृतता परमं परमेपरमेति
सुतीति स्वरूपं स्वरूपेण स्वरूपं नमरातिमलति सुत्रय
त्रयसृवते तत्स्वरूपमा ॥ ॥

वृन्दतीनं समसुनं सेवतेः प्रत्यपतिः
वृसुनसयमागिस्त्र वरयः सुदस्त्रसेवतः ॥

प्रत्यपति स्वरूपं सेवतं सेवत वरयः वराधितगात्रेपरसन

Digitized By eGangotri

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

Digitized By eGangotri

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

Digitized By eGangotri

सूक्ष्मरूपधृग्भवति ॐ उपांशुर्मन्त्रस्तु उक्तंमेवत्त य
स्थूलरूपधृक्सूक्ष्मरूपधृग्भवति ॐ मानसमिति वैश्वरूपेण
तः विश्वरूपेणतः विश्वरूपेण रूपेणयस्य स्याती
सूक्ष्मरूपधृग्भवति मन्त्रजपस्य विनियोगः॥ ॥

ॐ उच्चैरिति गायत्रीमन्त्रमेवन
मन्द्रमा ॐ उच्चैर्मि मन्दमि वलम
मि ह्र‍दमि रूपेणानुभवमि वि
श्वमि विश्वयः मन्त्रमसि मवयः
॥ किङ्कः

उच्चैः पाठो भवन्त्यत्र मनोयमः मदः
संविमर्शेवप्रवाति देवच्यमः यद्दिगाक्रदमिके भवति,
वलंमदपरि मूलकं कृतिकमेध्रु विमेधकर
कल्पमूरः येनापि मूर्भवति रूपेणानुभवमि।
यत्रभावेमेवः यत्प्रभुदृमसिमेवनंमहे तुमेवमि
मंकृतक वामि सत्रि वदिमेवः सूक्ष्मं मेव उक्ते रूपव
सं। स्थूपमीव नंम

मं॰
ली॰
३

[illegible] विलासितेयं यतः [illegible]
[illegible] सर्वमेव [illegible]
[illegible] मेवकालः
[illegible] समस्तं [illegible] कलयति
[illegible] समस्तमा [illegible] कलयति यस्मुद्भुमेवेदं [illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥

[illegible]
[illegible]
[illegible] कलयति [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

कलयति

= [illegible]

॥ इति पञ्चस्तवक्रमस्तोत्रकेषु नाम
तृतीयललाटेषु रञ्जनीलस्तुत्य तृ[illegible]
विधुमिवस्तूयतः [illegible] यथभंक्रदणे।

भक्तेषु [illegible] स्मृ[illegible]: स्मरनस्तुम प्र[illegible]ने प्र[illegible]स्तु स्तुयामं
भैरवं यमु उपासि स्मृद्गन मन्त्रपभैरेपयोगिने
[illegible]: स्मृतिस्मी[illegible] [illegible]: उरु मचमन्त्रेषु मेव
[illegible] ठित्र्यभिति स्मृति[illegible]
स्तापेन स्तुन मंमुवणे येया[illegible]यति वस्तुपयति।
मभ्यं वस्तुति प्रतिपद्यति येद्विष[illegible] मेवष्टे
स्तुक्षेमेवत वक्ष[illegible]नयर्थयति वस्तुपयति मभ्यं
वस्तुति प्रतिपद्यति ॥ उन्मनानमवस्तुम्मंस्कृतः
प्रस्तकम[illegible] विशिष्ट सकलवैभिद्गतः सुष्टुपूर्वेण
स्तुनयध्येयस्तुवस्तुमयः [illegible]
रयमनिष्टमेवः उक्षमस्तुयंते उउमव पामेश्वीष

Digitized By eGangotri

[illegible]

Digitized By eGangotri

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

देवता । [illegible] विनियोगः ॥ ॐ [illegible]
[illegible]
[illegible]
इति । [illegible] लोकदेवता [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] नमः । [illegible]
[illegible] विष्णवे [illegible]
[illegible] नमः । [illegible]
देवता [illegible]
[illegible] नमः । [illegible]
तेन लोक [illegible] लोका [illegible]

Digitized By eGangotri

ये च दृष्टान्ताः सर्वलोकस्थविस्पृष्टीति ॥ तेन पूर्वपक्षि
णैव सम्मतिभिः दृष्टान्तैरितीयम् ॥ तथा सर्वपुराणेषु सत्त्व
शांविधं सर्वसंस्थितं स्वदृष्टान्तं तत्स्वयमा । सर्वलोकस्थवि
स्पृष्टित्वमस्मद्दृष्टान्तयः सन्तः । स्वप्नविकल्पैरेव सिद्ध
स्यैव पाञ्चभौतिकत्वमिति ॥ सत्र स्पृष्टैककविधः । सम सन्तोऽसौ
तिकः सन्तः ॥ स्वस्वरूपः ॥ स्वप्नविकल्पैरेवः सन्तः ॥ पू
र्वपक्षपरैः [illegible] सर्वपि समस्य स्वप्नवि
धे स्वैव सन्तः ॥ तेनैव तस्य पाञ्चभौतिकत्वमिति । पञ्चसन्ताप
क्लिसमीसप सर्ववरः ॥ सत्र स्पृष्टैककविधेव [illegible]
[illegible] विवक्षयं ॥ संसुनश्च सत्यवत्ते
स्वपि स्वविसेयस्थिति सम सन्तः सङ्कल्पतः [illegible]
क सन्तः ॥ [illegible] सुमतीरेष्वपि सुवर्ण[illegible]ः ।
[illegible] सत्तसूलक्ष[illegible] सा [illegible] समकस्थ[illegible]क[illegible]
रः कलङ्केनयुक्तापस्त ॥

सं॰
टी

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीम
हि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

ॐ गायत्र्यास्कन्दः ऋषिः प्रजापतिः सविता देवता
उपनयने देवाग्निषु विनियोगः, उषामन्त्रेपायनः,
विश्वामित्रऋषिर्गायत्री सविता उषा देवतोपन
यने जपे विनियोगः उषेति। अत्र विश्वामित्र
प्रजापतिर्वा विवक्षितः ऋषिर्यज्ञुस्तुत्सविता
देवता रूपं ... पयोधिपतीयमानज्ञ
पक्षेषु यज्ञ ... पतीत्युपर्या पि
पित ... उत्थापयति युक्तिप्रक्रमेऽपि
... विवक्षितः उषेदक्षितं यन्त्र प्रतिपादनयोग्यं विपदयज्ञं ।
... विवक्षितः ऋषि
येन भवति ... प्रभवति कश्चिद्दिमन्त्र

Digitized By eGangotri

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

म.ली. १ [illegible]

Digitized By eGangotri

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

Digitized By eGangotri

[illegible]

भ. ली. ३

Digitized By eGangotri

ज्ञे विवक्षमाणवेद्यस्य स्युः सूक्ष्मस्युः स्मृत्यभिति,
यस्त्वं स्थूलस्य सूक्ष्मसूक्ष्ममिति अस्यास्त्वमुक्षणमः ३
ज्ञेयस्थूलं वले प्रतिबिम्बं प्र॰ वैबले ३ स्थु॰ प्रतिबिम्बं
अस्य सूक्ष्मबले मध्ये सूक्ष्मोयमे त्वं वैभवाय स्यूष्टं
स्य प्रतिबिम्बं सदैवभवायं भुरेश्र॰ वैगाय भुन
प्र॰ भुरे स्थूलसूक्ष्मयं भुरे स्यास्य यहीतम भवमे
व भ्रमद्वेदे वेवमाभयस्य शुद्ध दस्युष्प्र॰ मृ
यरे उदेके माविरीभा तद्भ्रमहे मत्वस्फः वगत भुवे
स्व मभवक्रम उद्ग्रति नउघ उत्पत्स्य यह्रीभव तक्रय
ग्ने यस्मिन्दव स्वपिवस्तिव प्रतिगच्छति नेदेवैस्य
स्थूलं कंम्सन प्रकं प्रति यत्सं श्रीलकच्छल च्छति
गच्छीयस्मे स्त्र स्युस्तु भ्रमं भद्रयस्य स्वघवतीयं
यीविहृयमुवस्तुतिगच्छीयस्य भेस्त्र स्त्रतिस्त्रतीयं
यममभद्रयस्य स्वघवयास्मिं प्र॰ यमुवस्तु तिगा

Digitized By eGangotri

[illegible]

[illegible]

Digitized By eGangotri

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

Digitized By eGangotri

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

Digitized By eGangotri

Digitized By eGangotri

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

Digitized By eGangotri

𑆠𑆴𑆪𑆓𑆱𑇀𑆪𑆶𑆠𑆩𑆼𑆮 𑆇𑆱𑇀𑆪𑆶𑆥𑇀𑆫𑆼𑆮𑆱𑇀𑆪𑆶𑆩𑆮𑆴𑆠𑆖𑆾𑆫𑆼𑆁 𑆛𑆼𑆤𑇀𑆤𑆥𑆵𑆩
𑆢𑆴𑆑𑆱𑇀𑆪𑆶𑆩𑆮𑆴𑆠𑆂 𑆪𑆂𑆩𑆮𑆴𑆠 𑆱𑇀𑆮𑆩𑆳𑆑𑆁𑆑𑆩𑇀𑆫𑆴 𑆱𑇀𑆪𑆶
𑆤𑆴𑆤𑆴𑆩 𑆥𑆑𑆼𑆠𑇀𑆪 𑆩𑆳𑆤𑆪𑆠𑆴 𑆱𑇀𑆤𑆪𑆠𑆵𑆠𑆴𑆩𑆼𑆪𑆂 𑆠𑆴
𑆤𑆩𑆱𑇀𑆤𑆴𑆩𑆳𑆤𑇀𑆠𑆪 𑆠𑆴𑆇𑆠𑇀𑆩 𑆮𑆴𑆠𑆖𑆾𑆫𑆼𑆁𑆩𑆴𑆠𑆴 𑆇𑆠𑆱𑇀𑆪𑆶
𑆤𑆂𑆇𑆩𑆂 𑆥𑆵𑆩𑆢𑆴𑆱𑇀𑆪𑆶𑆪𑆼𑆩𑆱𑇀𑆠𑇀𑆪𑆪𑆩𑆂 𑆱𑇀𑆪𑆶𑆪𑆑𑆶𑆥𑆴
𑆪𑆩𑆴𑆠𑆴𑆥𑆑𑆁 𑆛𑆤𑇀𑆤𑆮𑆴𑆩𑆼𑆣 𑆤𑆳𑆖𑆴 𑆇𑆓𑆥𑆴 𑆇𑆱𑇀𑆠𑆶
𑆥𑆶𑆪𑆼𑆓𑆳𑆩𑆼𑆮 𑆪𑆱𑇀𑆠𑆶𑆩𑆶𑆪𑆼𑆓𑆼𑆬𑆑𑇀𑆫𑆼 𑆇𑆓𑆩𑆪𑆼𑆓𑆳𑆪𑆱𑇀𑆪𑆶
𑆮𑆬𑇀𑆑𑆶𑆁 𑆪𑆱𑇀𑆠𑆶𑆑𑆼𑆤𑆠 𑆇𑆱𑇀𑆠𑆶𑆑𑆼𑆮𑆼𑆱𑇀𑆪𑆶𑆂 𑆩𑆪𑆠𑆁𑆮𑆶𑆂 𑆇𑆩𑆳𑆱𑇀𑆪𑆶
𑆠𑆼𑆠𑆪𑆱𑇀𑆠𑆶𑆑𑆼𑆇𑆱𑇀𑆠𑆶𑆑𑆶𑆂 𑆩𑆱𑇀𑆪𑆶𑆩𑆳𑆱𑇀𑆪𑆶𑆠𑆠𑆴 𑆇𑆱𑇀𑆪𑆶𑆑𑆱𑇀𑆪𑆶𑆩𑆮𑆴𑆠𑆂
𑆩𑆖𑆛𑆮𑆤𑆁𑆥𑆶𑆩𑆮𑆴𑆠𑆂 𑆪𑆱𑇀𑆪𑆶𑆮𑆬𑇀𑆑𑆶𑆁 𑆩𑆮𑆴𑆠𑆩𑆖𑆛
𑆮𑆤𑆁𑆩𑆖𑆛𑆮𑆱𑇀𑆪𑆶𑆩𑆪𑆠𑆼 𑆩𑆮𑆤𑆱𑇀𑆪𑆶𑆮𑆤𑆱𑇀𑆪𑆼𑆮𑆩𑆮𑆴𑆠𑆼
𑆤𑆼𑆩𑆱𑇀𑆪𑆶𑆠 𑆥𑆤𑆂 𑆑𑆴𑆁𑆱𑇀𑆪𑆶𑆇𑆱𑇀𑆪𑆶𑆩𑆮𑆴𑆠𑆼𑆮𑆱𑇀𑆪𑆶𑆩𑆵𑆖𑆴𑆑𑆵𑆫
𑆩𑆴𑆪𑆠𑆱𑇀𑆪𑆶 𑆠𑆼𑆑𑆁𑆪𑆼𑆛𑆤𑇀𑆤𑆂 𑆤𑆼𑆩𑆳𑆑𑆁𑆟𑆴𑆪𑆼𑆮𑆱𑇀𑆪𑆶𑆂 𑆥𑆶𑆩𑆼𑆩
𑆩𑇅 𑆪𑆳𑆠 𑆥𑆶𑆮𑆪𑆠𑆴 𑆥𑆩𑆳𑆑𑆩𑆩𑆼𑆑𑆼𑆣 𑆱𑇀𑆮𑆩𑆳𑆩𑆵𑆤𑆁𑆮
𑆬𑆵𑇅
𑇐𑇑

Digitized By eGangotri

स्तुंघेल्लयजीहृः यम्लुवन्तुः मित्रयमेवयंकन्ते
णियेयेनः धूमेमयत्रा णमगकमभेक्षेधुवज्जिव
त्रीः धनः धनः ततत्वकज्जमक्षेनवक्षविणमदक्षुत्र
क्षः सविस्तृमङ्कलगातणक्षिदृमेवतमुक्तपः धनक्षतस्र
ते तघम हृभ्रूपकेकवेकूतदमामक्षमयतेक्रूमे हृ
ल्लतेक्षीधृतयमामक्षूगाम्नत्रेदनदृपि कल्लाग्निक्रप
[illegible]
सतमृत तघ कैतेकधयतेलकं नतिगामूयतेधूरः।
गङहृगाम्भूरल्लभूंकगावक्षगातमृते मूतयक्षपिम
विततकज्जडाति सविस्तृकज्जयेक्षित्रत गायहीभक्षधत्री
यते तघाधिपयभङ्कमित्रयं सविस्तृकज्जयेकेमेनवि
कृते एव यागवसविस्त सगवकज्जः सविस्तृकज्जयेय
हृतेव तघम रदेक्षित्रवक्षूक्षी धनगपिकिंक्षते वंन्ने
वतेरंवगल्लीयंधूकनीयंमगमक्षूत्रक्षूर्मि नमाय

Digitized By eGangotri

सृनेनेयमनीयमिष्टः तथास वेरंवर्णीयंस
जनमंसरवीदद्भिः सुमिष्टत्वज्जांतयस्वदज्ञांसंव
समस्ताद्भिः जनमहर्विनसयहुःपसृहिविपसृ
स सृनेनपधमेयसुमहस्थहः सुदमगले सवितुर
मिहस्थसिहृवरगहे तजसृयमः वयंधकेष्व
धेययति सवंशायवृम्हे तसृमेवसृसहदसृ
पवलृषनसुमेवमहपृदवहंसपुवृशीतिद्भिः वि
सषेश्चुरमिद्भिरणीयते तथास किंश्चुतं दनेश्चुर
मिवृधृतिधुतुमितिसेषः तथास श्चुरमिसपुले
केधकसकं भूर्भूर्लोकः भुवः भुवर्लोकः स्वर्ग
लोमिष्टः स्वः स्वर्लोकः महः महर्लोकः जनः ज
नलोकः तपः तपोलोकः सत्यं सत्यलोकः एवसप्त
म. पतिक्रमेणवसिद्धना सप्तलोकनमिष्टपृवतिधु
ली. सनेषु दजागतसप्तलोकनीयवहुकसंहीहृष्टः
०३

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

Digitized By eGangotri

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

Digitized By eGangotri

ॐ श्रीभभृरस्सुन्दरस्सुश्रैतैयश्रेनमः ॥ ॥ ॥

भ्रदस्तुभभद्रस्तु भद्रपउयस्तुभद्र केउहः प
पैहरकत्तं यद्दूपपभकद्धं भनभव
मदभुहं पक्कभृमेभ्ने॰॰॰मिसृ गरिभुम
वलभाउ यक्किन्निद्दविउंभयीमभदभभ
उंपैने भ्रदेस्तुउखिदन्देभिसृद ॥

ॐ उपिपृउरपः पीतुहिरमभेउी भभंभ्रदस्तु भद्र
स्तुभद्रपउयस्तुरकत्तंभद्रः यस्तुः भद्रपउयः ओक्त्रूम
यः केहरकत्तं भद्रक्लेहः पपैहः स्वभम्नयस्तुर
रेहरउरक्रुः यक्तु भद्रः केपः भद्रपउयः केपपउयः उ
क्रियाभि॰॰ भद्रक्लेहः केपकेहः पपैहरकत्तं के
पत्रद्धम्नेन भभैउमपभः केपभाठवउ उनभक
दंकेभोहक्रुः किंम यद्धपंभनभवमदभुहं प
क्कुभक्लो॰॰॰मिसृ रक्कभकदंरुउवनभ्नि। उद्धपंर

Digitized By eGangotri

शिववल्लभत्वं किं तु यत्किञ्चिदपि भक्तिमत्त्वं यथ
भक्त्यधिकं त्वमत्र दृष्टं किं स देवः तत्किं यथ
भक्तैर्मुदे दृष्टो देवः किं तु मुदे दृष्टोऽपि दुर्लभोऽभूत्
पुरुषार्थरूपं पतिः किं तु सम्यग्येनैव समग्रभक्ति
येन वस्तुतः केवलमेकत्वेन स्तुत्वा भक्तं तव तु स्तुत्य
रूपेण सत्त्वेन रूपीरूपाः सिद्धाः सिद्धा नैव सिद्धा
इति निरपेक्षेण भवति ॥ इदानीं देवं शिवस्तुतिपद
भिः स्तनुस्तुतः स्तुतिभक्तेर्विनियोगाः ॥ ॐ ॥

स्तुपः पातु पृथिवीं पृथिवीपतेः पातु
अयं पातु वक्त्रं शिवः वक्त्रं पातु
नत्वा यत्र श्लेष्म सेव्यं यत्र
सूर्यविम्बं सत्यं पातु समस्तं सर्वं
पुष्पितं रूपं दैवं स्तुत्य उमाभक्तेः ॥

भ॰
टी॰
७५

स्तुपः पीठं शिवसमेतं स्तुपः पृथिवीं पातु पवि

रं ऋतवतु पृथ्वी सस्यैः प्रजा भवन्ती सं तोऽस्तु भवतु नके
बलवान् पृथ्वी भवतु किंम सकृ॰ सदृशि भवतु यत्र
देवस्य सृष्टिपालनस्य रसस्य भवतु ऽसुकृतं सर्वं भवतु
तु ॐ स्योना पृथिवी भवतु न पञ्चवेदे देववन्दितः ॐ स्नु।
सुपः पृथिवी भवतु सर्वं पञ्चवेदं भवतु ऽऽत्मः।
ॐ स्योन देवसुवन् द्रुह्य स सपः भवतु ऽतिलिङ्गः
ऊर्ध्वाश्रयं सये ऽस्तित्वं सपवनसहेत्वं निर्वृतिसहेतुं य
स्वस्व॰ तिस सस सव॰ सपुरीप्रेरं पुरीप्रेरं
ऽऽत्मैव सवस स सपः भवतु ऽऽत्मः ऽऽसस्पृः
यः सुसप्तेतः स्वर्ग सुखसमृद्धिवत्तु ऽस्योना सुपः
सुसमवेसससीयसेदपवनपूवकसृष्टिसृष्टिसुपं
संपवयचिन्ति सुसंसवन्तमः सवपतिसपिसं
सुपि जवन्ति त्रिवृतीयये पूषस प्रजाति प्रजाभिः
जलिङ्गवृक्षये नमवसिति सस्यमी सुतेवृतीय॥ ॥

॥ पृथ्वीमन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता
(आसने विनियोगः) ॥

Digitized By eGangotri

मग्रिस्नमभमसृस्नमसृपउयस्नमसृ सेऽहः
पयेरकृत्तं यमकृपपमकद्ध मनमव
मदस्रुहृ पकृभ्रमे॰॰ मिस्र मदस्रुमव
लमदुउ यद्धिश्लिस्नु विउमयीमसदममदुउ
येने मद्देमुउ धिरदेमिस्रद ॥

ऽतिमयमपः पीतु शिरममेउा मसुःवृकृमसृपउ
यः यस्नुपउयःऽकृसयः मद्देमुउधि वृकृ॰॰ भ्रदेव
रदेमिमवंपपंउभ्दमकृउमीशकृः ॥ ॥ मसृस्नवं
भ्रदस्नमेउिवद्विहमा ऽऽःकृमविभ्रु॰॰ मिमिम
\\ ल्लनेकृदउा ॥

वि सृपेदिस्नमयेकृवः विउ
नकृल्लेमयउन विमदेव॰ यमकृ
मे वियेवः मिवउमेममः विःभ्रकृम
येउदनः वितुमउीविवमउरः विःभ्रदम
वस्नमभवे वियभ्रकृयययमिवृम विसृपे

\\ मनयघमनः ॥

मं॰
ली॰
७८

Digitized By eGangotri

वेशघ्रूक्रोरेवेहृभ्रिभेभवेभ्रत्रिविहूभेउ। नकरत्रुम
पेस्त्रुय वृक्रदहविनमृडि हेभ्रिक्रूमयक्कमे भ्रत्रि
ललटे मृपः पमघेः मत्रृमपि ठिक्रुभेमिरभि
मकमे मुकमेक्रविभमुके भमुकेमउघकमेक्र
भेमनवणक्रिपेउ। क्रुभिमक्रेनणर्वकमंहृ
मयंभ्रुडभा। मिरभृवामिरः मक्रभत्त्लनेभमुमक्रः
॥ गयरं मक्रः मृक्रेवइंभ्रक्रेहघ्रभ्रिमिरमुपमृग।
मभ्रुगीधेव भित्रुड्डीपः भज्लनमे विनियेगः ॥ भ
यःडिभ्रापनभ क्रुल्लिहत्रनभ उनेदभकलकेहं
लक्रुमयेउमक्रेपमनउ। यमक्रूहदह दमुपः
दिः यभ्रदमक्रेयभ्रदउ। घयुयं भयेकुवः भुभय उं
डिभ्रापनभ भापभ्रुकवयिहुः भुकवघ भवपु
नभिडिभेधः उापवंविमिघ्रुकवहंः कमक्रुउत्रः
मभ्रुउ। क्रुल्लेमणउन णवयउभ्रुपयउ यघवयं
भवभृत्रुमेः केमकवभः उघक्रुरकेहकिपुयः
मत्रपीनेभवभ्रापाभिडिकवः उपुनघुभघनम्रुडिउ

Digitized By eGangotri

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

Digitized By eGangotri

Digitized By eGangotri

[illegible]

भ. ली. ०३

Digitized By eGangotri

य३प्रं३यक्ष्मकमेवमम्प्रिन्निपयमंम्रुठवे वयंय्र
म्नक्ष्मुमम्नम्रुलंपदपुंवन्द्र गम्रेमम्नीयमः ध्
म्रयमम भेक्रधुध्रियम्नकमभ्रिटमम्नरे मुः
मुपेण्णनयषमनः यम्नङ्मस्रुमम्नस्नेवमम
म्नरे ३म्नमेक्रधुध्रियेयनम्नमेण्णनयमं उ
मंद्म भदन्त्रठवन्द्रम्नेकैवमम्नेवत्र मवम्नमग्नुय
[illegible]
मीद्धिदेद्विहमिधीडि मचणउकउंउघधिमुक्त
ध्रुठयघेडि मचणउधमभ्रुमीडिमपः मभुत्रः
मचविधयमुक्तमिविकल्पत्नउंडीधुगमीडिक
द्भुठवः णवमद्दडपि मवमवुद्दं३मदगं मवंद
मुपः ३घमनमभृप्रचकधिउमूवः यक्ष्मङ्गवद्धि
नः मूलंपदधुं मन्नरुधिं गमभगमभुक्तभ मुव
मिडि गलंयेवैकाद्धं यमृमन्नयथमिण्त्रुमघ म्नयय।

Digitized By eGangotri

𑆑𑆡𑆪 𑆱𑆪𑆱𑇀𑆫𑆶𑆤𑆴𑆮𑆩𑆱𑇀𑆫𑆸𑆥𑆳𑆢𑇀𑆩𑆑𑇀𑆫𑆶𑆥𑆫𑆴𑆤𑇀𑆠𑆩𑆑𑇀𑆫𑆸𑆩𑆼
𑆓𑆑𑇀𑆫𑆴𑆩𑆶𑆩𑆷𑆥𑆢𑆠𑇀𑆫𑆶𑆱𑇀𑆫𑆸 𑆱𑆳𑆠𑆱𑆑𑆼𑆱𑆼𑆤𑆳𑆱𑇀𑆠𑇀𑆫
𑆣 𑆉𑆢𑆪𑆣 𑆱𑇀𑆠𑇀𑆫𑆶𑆠𑆴𑆂 𑆥𑇀𑆫𑆵𑆠𑆴𑆂 𑆑𑆼 𑆱𑆶𑆥𑆂 𑆤𑆼𑆩𑆢𑇀𑆤𑆳 𑆱𑆤𑇀𑆠
𑆪𑆣 𑆑𑇀𑆫𑆸𑆢𑇀𑆣𑆼𑆤𑆼𑆠𑆴𑆩𑆼𑆰𑆂 𑇆 𑇆

𑆢𑆴𑆱𑆶𑆮𑆬𑆂 𑆱𑆶𑆩𑆪𑆂 𑆥𑆮𑆑𑆪 𑆩𑆱𑆢𑆑𑇀𑆫
𑆱𑆷𑆥𑆼𑆪𑆩𑇀𑆫𑆢𑇀𑆫𑆂 𑆪 𑆱𑆶𑆓𑇀𑆫𑆴𑆑𑇀𑆫𑆁𑆠𑆫𑆴𑆮𑆴𑆮𑆶𑆥
𑆩𑆶𑆤𑆱𑆶𑆥𑆂 𑆱𑆼𑆱𑆼𑆤 𑆠𑆮𑆠𑇀𑆫𑆶 𑇅 𑇐 𑇆

𑆱𑆶𑆥𑆳𑆑𑆽𑆮𑆢𑆂 𑆯𑆴𑆱𑆶𑆥𑆳 𑆢𑆴𑆱𑆶𑆱𑆼𑆮 𑆱𑆶𑆢𑇀𑆣𑆶𑆤𑆴𑆱𑆬𑆼𑆮𑆢𑆼
𑆣𑆩𑆁𑆠𑆢𑆴𑆱𑆶𑆮𑆬𑆂 𑆱𑆶𑆩𑆪𑆂 𑆥𑆮𑆴𑆱𑇀𑆑𑆠𑆂 𑆱𑆶𑆠𑆱𑆮
𑆥𑆮𑆑𑆂 𑆥𑆮𑆴𑆱𑇀𑆪 𑆱𑆶𑆥𑆳𑆑𑆴𑆑𑆂 𑆣𑆩𑆑𑆱𑇀𑆫𑆸𑆥𑆑𑆢𑆠
𑆪𑆢𑆣𑆼𑆪𑆱𑆂 𑆉𑆑𑇀𑆫𑆶𑆑𑆢𑆪𑆱𑆶𑆩𑆼𑆮𑆠𑆂 𑆑𑆓𑆤𑆼
𑆣𑆩𑆳 𑇅 𑆉𑆣𑆩𑆩𑆠𑆂 𑇅 𑆱𑆶𑆠𑆱𑆮𑆩𑆩𑆢𑆼𑆱𑆶𑆥𑆮𑆵𑆢
𑆩𑆣𑆑𑇀𑆫𑆴𑆥𑆠𑆳 𑆉𑆱𑆑𑇀𑆫𑆩𑆠𑆮𑆢𑇀𑆣𑆶𑆩𑆁𑆩𑆢𑆩𑆷𑆱𑆶𑆩𑆩𑆑𑆠

म. ली. ०७

Digitized By eGangotri

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ॥

[illegible]
[illegible] १

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥१॥

Digitized By eGangotri

[illegible]
[illegible] ॥ ॥

[illegible]
[illegible] ॥ ॥

[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥

Digitized By eGangotri

[illegible]

Digitized By eGangotri

मेधिंतपवित्रमा॥ उंभे भारद्वाजी हृदे श्रीं संभृतमग्रम
कमा॥ उपाम॥ स्वाध्यायस्ते काले हृदेहृषे प्रयाति श्रीं स्वस्ति
सुस्यप्रसा स्वधां मधिस्थिति श्रियं सम भा सु स्वस्ति
कं सप्तर्षि निरन्तरं समपवज्ञं मग्नं कामहुत
उस्कामितिश्रीः सिकमक्रमकपृष्ठवं देवः ऊतिके
शं स्वस्ति उस्कमवेन भक्ता न छवक्रंकेष्ठपपछवे
लक्ष्मीं देव इन्द्रः ।३॥ पावमानीः स्वस्त्ययनीः सुदुघा हि
घृतस्नुतः ऋषिभिः संभृतो रसः ब्राह्मणेष्वमृतं हितम् पावमानीः
स्वस्त्ययनीः सुभि पावमानमकरि स्वधया पृष्ठतः
ऋषिः स्वरूपः स्वरूपः पूषुम्नः स्वस्तिप्रतिमूर्तिः
देवीर्मनुष्यास्तेषामीहिताः संभृतं स्वदश्वाभीह
देवीभिः पावमानीः पवित्रं स्वस्ति स्वस्ति
स्वस्ति क्रतिं स्वधया दैवीं भक्तां सम्भृतां भक्ष
देवीं समन्दाः पावमानीः स्वस्त्ययनीस्ताभिर्गच्छति न
न्दनं पुण्यांश्च भक्षान्भक्षयत्यमृतत्वं च गच्छति उषा पावमा
नीः स्वस्त्ययनीः याभिरापीताभिर्देवेन नन्दनेवन नमः ॥

भ·
ली·
३०

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] येन देवाः पवित्रेण

आत्मानं पुनते सदा तेन सहस्रधारेण पावमान्यः

पुनन्तु नः येन पवित्रेण [illegible]

[illegible] पवित्रेण [illegible]

ना पावमानीः पुनन्तु ॥ ३ ॥ यः पावमानीरध्येति पवि

[illegible]

[illegible] ॥ १० ॥ यः पावमानीरध्येत्यृषिभिः संभृतं

पवमानी सर्वमश्नाति [illegible] ॥ ३ ॥ पवमानी [illegible]

Digitized By eGangotri

नीः भ्रह्यादिप्यउस्नुउः टक्षिठिः भस्नुंउरभेव
क्षे भ्रभउंरभभा॥उ॥ प वभनीः भ्रभुयनीदठि
नस्नुउिनस्नभा पटंस्नुठक्रुकमयरुभउडुमग
स्नुउि॥ रु॥ प वभनीभिमजुन ङभंलेकभभभशभा
कभ स्नभरूयजुनेस्वैवेस्रवीभ्रुभहुडः॥ १॥ येनस्र
वःपीविरेण्नस्नंपुनउेभस्र उेनभरूभुपवे प
वभरुः पनजुनः ॥

मैत्रेमैवीरठिष्णुये
सुपेठवजुपीउये मैयूरठिभवजुनः॥

सुपास्रैवट गायशीस्नुस्रः भिजुद्मीपस्रुभ्रगीषस्रु
वर्स्नं॥ स्ववभस्रिस्रनस्रिगु युक्तस्रेस्तु सुपः नेभ्र
कंमंठवजु मभिउिभ्रापनभ भ्रापजुपः भ्रापक
रिस्टस्रवजु उस्नक्तृवस्नुधंभ्रापयठवत्तुिहर्जः किं
भ. स भठीस्नुयमंठ वजुउभुउेउशीस्नुः भ्रजास्रिठल
ली. भिपुः सुठिभ्रापेनीस्नुरुठीस्नुः स्नुस्नभास्वस्रेमंव
११ (लविकरः

सतीश्रिवितपूर्विः उश्रम ॰ त्रानिपूपूये सुंप
भ्रकंठवंउ सुपेह्रुत्रानि्तुपे॰॰ पति॰॰ भत्रि उ
घम यूक्त॰॰ सुपस्नूप घिवीमत्रभिति स्तन्म
घनिह्रूत्रानि ठवत्रीतिम उघमपीउयेठवतु
पनभुपलत्र॰॰ तुक्रपीउभुपपति॰ भकाति
ऐठवत्रिहतः मघव सुठियल॰ नमठीश्रिः पी
तः मम पतिह्रि सुमनिय नघसमप नघस्ति कमपि ठवत्रि तः
सुपिश्रुरीमेवउयेमभहत्रूउ मंयेगठिभुवतुनः
यभिमूल॰ येउभिमीठगवतीति यः मंमयेत्रृ
ठिः तूनमिस्रविमेय॰॰ भिति लत्र॰॰ यम्रः
पठवभहद सुपेभ्रकभाठियवतुक्रचत्रिहर
कः उनैधवक्रक्तः येच्रूपिः मम्रत्रिनेम्रः पठ
वभंपेभ्रकंक्रचतु मघव येउमनीगमिठि
मिस्रीठवति उतियमठ्रनस्रेम सुउ येरम्रनेय

Digitized By eGangotri

मुक्तिदं भावितं स्वस्मात्कं स्वप्निभूवत्तु श्रीभूयत्तिदृशः
यस्य स्रुचः नेत्रस्मात्कं पिबत्तु ऽऽतिमेधः सन्तवत्तु
कल्प ऽऽनिरवत्तु किंकृतः स्वीः सेवत्स्रुतिश्री
कृष्णियेयः किमस्य सत्त्विभूये उपसद्भं पीत
ये पञ्चयस किंमतः स्वस्मात्कं पिबत्ते ऽऽ संसृष्टेः
कल्प ऽऽ येयः स्वप्निभूवत्तु संसृष्टेविति सस्त्वग
भरतेयनो प्रयः ॥

सत्रस्रुपेणत्रयः सत्रसत्तत्रयः सत्रः
सस्रुत्रियस्रुपः सस्रुतः सत्तु क्रुपः ॥

स्रुपा सेवतः स्वतस्रुपा सेसधस्वः प्रस्वस्रुसा ॥ ०
त्रनि सेव स्वस्थले रव पत्रयः स्वसत्रपस्वलभु
विसि स्वसे वध स्वत्रपः यस्य सस्रुत्रवः सस्रुति
यः क्रुपे रव क्रुपः ऽः सत्तनेस्मात्कं भावयरव
त्रिदृशः ससऽस्वत्र स्वर्गनिपऽः पस्वप ऽऽ ऽः ॥

५ स्रुपे समस्तस्यात्र स्रुस्वयत्तु यजेनम

सं.
ली.
११

Digitized By eGangotri

[illegible]

Digitized By eGangotri

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
भ. [illegible]
ली. [illegible]
९२

Digitized By eGangotri

[illegible]

[illegible]

[illegible]

Digitized By eGangotri

𑆥𑇀𑆫𑆮𑆢𑆠 𑆪𑆱𑇀𑆩𑆴𑆤𑇀𑆩𑆬𑆼 𑆯𑆫𑆵𑆫𑆩𑆁𑆬𑆓𑇀𑆫𑆁𑆱𑇀𑆠𑆶𑆮𑆢𑆠 𑆪𑆱𑇀𑆩𑆴𑆤𑇀
𑆠𑆼 𑆩𑆴𑆠𑇀𑆫𑆽𑆮 𑆯𑆑𑇀𑆠𑆴𑆢𑇀𑆢𑆵𑆢𑆮𑆳𑆤𑆱𑇀𑆩𑆴 𑆯𑆑𑇀𑆫𑆷𑆣𑆴𑆪𑆟𑆳𑆩𑆵
𑆪𑆩𑆼𑆮𑆤𑆵𑆪𑆁 𑆪𑆱𑇀𑆩𑆳𑆠𑇀𑆠𑆵𑆢 𑆩𑆤𑆥𑆫𑆟𑆴 𑆤 𑆯𑆑𑇀𑆠𑆴𑆩𑆥𑆼
𑆯𑆑𑇀𑆠𑆴𑆩𑆥𑆶𑆮𑆤𑆱𑇀𑆩𑆴 𑆯𑆶𑆥𑆟𑆵𑆢𑆴𑆮𑆴𑆜𑆾𑆠𑇀𑆫 𑆯𑆶𑆠𑇀𑆠𑆵𑆢
𑆩𑆢𑇀𑆨𑆷𑆤𑆥𑆫𑆟𑆅𑆢𑇀𑆨𑆷𑆠𑆼 𑆪𑆢𑇀𑆪 𑆯𑆑𑇀𑆠𑆴𑆱𑇀𑆮𑆤𑆳𑆠𑆴 𑆑𑆴𑆠𑆤𑆳𑆠𑆴
𑆪𑆱𑇀𑆩𑆴𑆤𑇀𑆤𑆮𑆴𑆁𑆨𑆫𑆶𑆠𑆵𑆢 𑆩𑆳 𑆅𑆱𑇀𑆩𑆴𑆤𑇀𑆤𑆼𑆤𑆩𑆂 𑆯𑆶𑆥𑆂 𑆥𑆯

𑇆 𑆑𑆸𑆠𑇀𑆮𑆠𑆶 𑇆 𑇆

𑆨𑆳𑆢𑇀𑆫𑆤𑇀𑆠𑆶𑆩𑆱𑆥𑆯𑆶 𑆢𑆸𑆯𑆮𑆢

𑆑𑆶𑆅 𑆯𑆶𑆯𑆪𑆩𑆨𑆶𑆥𑆕𑇀𑆓𑆵𑆩 𑆱𑆷𑆮𑆩𑆤𑇀𑆩𑆼𑆮𑆑𑆴

𑆱𑇀𑆠𑇀𑆫𑆴𑆣𑆫𑆳 𑇆

𑆯𑆶𑆯𑆖 𑆨𑆶 𑆜𑆴𑆩𑆣𑆟𑆯𑆶𑆢𑇀𑆣𑆁 𑆩𑆠𑇀𑆤𑆨𑆶𑆥𑆵
𑆯𑆶𑆥𑆅𑆱𑆷𑆠𑇀𑆠𑆶 𑆩𑆥𑆯𑆶𑆫𑆳 𑆩𑆥𑆯𑆥𑆶𑆫𑆶𑆮𑆫𑆳 𑆥𑆕𑇀𑆓𑆵𑆩𑆫𑇀𑆢𑇀𑆣
𑆩𑆫𑆳 𑆑𑆴𑆱𑇀𑆠𑇀𑆫𑆴𑆣𑆱𑇀𑆠𑇀𑆫 𑆅𑆯𑆮𑆢𑆲𑆶𑆫𑆳 𑆮𑆢 𑆥𑆩𑆤𑆴
𑆨𑆴𑆅𑆫𑆳 𑆪𑆼𑆤𑆥𑆥𑆼𑆤𑆩𑆅𑆮𑆢𑆂 𑆥𑆩𑆽𑆠𑇀𑆫𑆮𑆅𑆳𑆠𑆴 𑆅𑆱𑇀𑆩𑆴
𑆩𑆁 𑆠𑇀𑆑𑇀𑆫𑆴𑆱𑇀𑆠𑇀𑆫𑆴𑆣𑆱𑇀𑆠𑇀𑆫 𑆅𑆠𑇀𑆫𑆴𑆨𑆴𑆅𑆱𑇀𑆠𑇀𑆫𑆥𑆩𑆅𑆢𑇀𑆪𑆩𑆱𑇀𑆠𑇀𑆫 𑆅𑆅𑆠𑆴𑆨
𑆜𑆵 𑆨𑆱𑇀𑆠𑇀𑆫𑆪𑆼 𑆤𑆴𑆥𑆅𑆂 𑆅𑆯𑆳𑆩 𑆪𑆨𑆨𑆶𑆨𑆥𑆶𑆠𑇀𑆫𑆴𑆤𑆂 𑇆
𑇙𑇕

Digitized By eGangotri

यस्तुस्वस्वरूपे विश्वात्मत्वं संयोगेन पापेन सह
पशुः पुरुषस्तत्त्वं पशुस्वरूपपशुः किं स मरणं
सैव किल्बिषत्वं स्वस्वरूपत्वं यस्सैव तत्पशो
देह किं तत्र कारणं स्वरूपस्य पशुत्वं तत्सैव
किल्बिषं तत्त्वमस्ति स्वरूपे विश्वात्मत्वं प
स्वात्मत्वं स्वरूपं स्वरूपिणं पशुस्वरूप
पशुनिर्भिन्नता किल्बिषत्वं बन्धनता बन्धन
स्वत्वं नः पशुता पशुस्वत्वं नः पशुत्वं
नता स्वात्मत्वं सत्त्वं सत्त्वं स्वरूपं पशुत्वं सिद्धि
तत्स्वरूपं स्वत्वं किं स मरणं सैव स्वत्वं नः
किल्बिषता पापता स्वात्मत्वं तत्त्वं स्वरूपं सैव
देहस्य तत्त्वं लिङ्गत्वे विनियोगः ॥ स्वात्मत्वं सं
पशुता विश्वात्मत्वं पशुत्वं स्वरूपं सं पशुता
सपशुनिर्भिन्नता बन्धनता बन्धनित्वं नता
स्वात्मत्वं तत्त्वं स्वरूपं स्वरूपिणं पशुस्वरूपं स्वत्वं नः स

Digitized By eGangotri

Digitized By eGangotri

श्रीभैरव उवाच ॥ देवदेव महादेव भक्तानामभयप्र
दायकः कैः नैमित्तिकैः मन्त्रैः यन्त्रैः पाशुपत
यन्त्रमिकैर्विधिः प्रोक्तमानिकैः सुरासुरपूज
ितैकपः पूजाविधि भवा सम्यक् कथयेनिवा
मंगलं पृच्छामि तत्त्वज्ञानिनं भिन्नविधि
भैरव सीनिद्रा नितिमूषः सिद्धिली कुरुवन्
इति देवभावे पूजकः देवाश्च वा ॥ इष्टभव्यं
[illegible]
देवभाव देवलक्षणा पूजनं मन्त्रमन्त्रं भनेयमृषेभमं
पनभा देवपूजकः देवाश्च ॥ श्रीपूजा विष्णु शिवे
कैवल्यं विनाशन भस्म नः सेपभूमवक ॥ ॥

तत्त्वं भवरूप परमभक्तवणमं विम
पूर्वं मृषध मषवधभक्ति हृदये उवन
॥ गते मृत्युञ्जय भ्रम ॥

शास्त्री शिष्यो मन्त्रवस्तु सेवकवाधिः उद्यत

ध्रुवं मुनमेपस्पृष्टिः प्रमैः ३पेमुल्लमस्पृष्टमृत्तुमहमेषु
वंदूमृकृयेवह॰॰मु ३िमकर३भिद्दृपमज्ञः मुषाये
हलेनममस्पृष्टे हेवह॰॰३३मंपमममस्पृद्धकम
हस्कृषाय कृत्वंमिथिलीकृतमिथिलंहृदूद्वमाव
॰॰मृत्तुपमममपमावयेहृकः मुषवपमं मुपमंमु
लमृकहमसंमु मुवममुषाय मिथिलंहृहु मुपेनयवे
नमुल्लपममपमावयेहृकः विमस्पृष्टं मस्पृष्टं वि
मुषाय मस्पृष्टं मकृं विविति वकृपं मुषाय मिथिलं हृकि
मुलेनधत्तेनव मस्पृष्टंपामं ध्रुपात्रिमक्वयेहृकः ।
मुषपमव्यविमृकृतत्तुरं हे मुभिद्द मभिडेः प्रहृ३
वस्पृष्टे कमि॰॰व३मनः मंत्तवयमनगामेनिषद्धपः
मृम किमकमाभिडेये मुमैहृयमैहमृपापनिवञ्ज
नहुता॥ हृदुयाभि वृक्र७वद्धमानमुरुममुय
॰॰मांनेदविष्ठिः मृदेहमानेवह॰॰ हृवस्पृष्टसंम
माननुयुः प्रभेषीः॥ हेवह॰॰यहृ॰॰मांनेदाव
ष्ठिः प्रोक्तमपृहि३किरमभुमंदहुयाभि ।

मं॰
ली॰
३१

Digitized By eGangotri

[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

Digitized By eGangotri

[illegible]

Digitized By eGangotri

[illegible]

भ० टी० ३७

[illegible]

Digitized By eGangotri

॥अथ स्वपादयः कोकिलोच्चस्वरः स्वपः भमेनमः
पपस्कुरुतुभेमयतुस्वगतियेगृंकाचतु कःकम्म
न्कुक्तेयथ यथस्व विदधीभवति क्रूपकस्मिंवेक्मुभेम
नः कूपकः पकृकः उथममतुवक्तः कनीनकेन
विकूपेनवेकूपकउति यक्त कुंपकेयरभकूपमेम
स्वुपक्तेमेमः कूमयंविपकंकूपकंवतुनकम्बं उस्कुकुः
पकप्राक्तः मस्त्रुभेक्षु हृदयेनलक्तेलिल
कनमा यथ कूपकस्तकृकस्कुल्यमेमवतुनकम्बु
लक्षक्तस्मृभनेनाः सुरविदधीभवति स्विनः
मस्कुीमलाफिवस्विनः पस्विमयक्तेनिकयाकेस्व
कूमययक्तेति मस्कुीमक्तेनिपाततः यथपस्वमेनक्त
पुगाः मस्कुीमावंतक्तमलास्विभंक्तेनिक्तेउकवति
यथमक्तपविकेपउभक्तंनिमलंभवति ततउ
नाभक्तावः यथनिमलनिमलंउतिमेधः उथम
मपति मलति क्ष्पंस भक्तय क्षुक्तं क्तमलल् क्तःमुकु
कृप

Digitized By eGangotri

ज्ञात्वा सद्गुरुं तीर्थं उपसेदुः स्वयं तत्र
द्वि[?]स्यत ततः सर्वे सत्त्वाः सर्वज्ञ
त्वरूपि संवित्ते सुस्यत सुदेवादि[?]
विरूप द्विसुसूसि[?]बद्धवसी सुदसंसुस
सेवा[?] यथाप्रथमकल्पयत्। शिवाज्ञ
॥ पृथिवीसूत्रविक्रमभेदः ॥

पृथिव्याम् सह[?]: सत्त्वभूक्षणः पुरुषपतिस्वत
[illegible] सूत्रेन सत्त्वप्रसमयेष्टतत्त्व ॥ तपेस्त्वं
समृद्धनमयेत्पतति **सूत्रेः।** तत्र[?]तीन्द्रगं स
सूत्रप[?] सत्त्वं भावेनसीधुत्ते वत्त्वमनगं त्वत्त्व
सर्वसस्यत [illegible]तत्त्वम्[?]: सर्वेषु[?] वै
सर्वं तिसूत्रेः **॥** तत्र पितृ[?] सत्त्वपमेवगतिम
त्वगं तत्त्वमित्तिदिगादृत्त्वसृ तत्रेः तपसनेपित्वम
सर्वसमहसत्कल्पदहस्त्रिहृवत्त्ववेगगमिद्वत्त्व
सत्कल्पमहत्त्वनः सादिः पुरुषः पुरुषपतिकानि

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
𑆱𑆁॰ 𑆬𑆵॰ 𑇓𑇐 [illegible]

Digitized By eGangotri

Digitized By eGangotri

Digitized By eGangotri

[illegible] 𑆥𑇀𑆫𑆡𑆩𑆂 [illegible] 𑆑𑇀𑆫𑆩𑆼𑆟𑆽𑆮
𑆥𑇀𑆫𑆡𑆩 [illegible] 𑆩𑆶𑆑𑇀𑆠𑆴 [illegible]
[illegible] 𑆑𑇀𑆫𑆩𑆼𑆟 [illegible] 𑆑𑇀𑆫𑆩𑆼𑆟
[illegible]
[illegible] 𑆠𑇀𑆫𑆴𑆂 [illegible]
[illegible] 𑆑𑇀𑆫𑆩𑆂 𑇆 𑇘 𑇆 [illegible]
[illegible]
[illegible] 𑇆 [illegible] 𑇆 [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] 𑇆 𑇘 𑇆 [illegible]
[illegible] 𑆥𑇀𑆫𑆡𑆩𑆂 [illegible]
𑆥𑇀𑆫𑆡𑆩𑆁 [illegible] 𑆩𑆶𑆑𑇀𑆠𑆴 [illegible]
[illegible] 𑆥𑇀𑆫𑆡𑆩𑆂 [illegible]

Digitized By eGangotri

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
भ. ली. ३३ [illegible]

Digitized By eGangotri

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]

Digitized By eGangotri

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

Digitized By eGangotri

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

Digitized By eGangotri

Digitized By eGangotri

[illegible]

Digitized By eGangotri

इत्युक्तेऽस्याः कीदृशं देवद्विजमिति देवत्वं भजन्ती द्वि-
जत्वं धत्ते किं कृत्वा सुखेन निर्मले पुनः किं कृत्वा धारमु-
द्रूपं किमि त्वन्मयता त्वन्मस्तुता इत्येवमेव पश्यन्ते तदु-
सरसः [illegible] सत्वं परिभ [illegible] सरसेः सत्वं [illegible]
सरसः सत्वं [illegible] सत्वं सरसं [illegible]
मूर्ध किम न केवलं सरसः सत्वं किं तु सरसः स
इत्यधिकृत्य [illegible] ॥

हंसः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदि-
षदतिथिर्दुरोणसत् । नृषद्वरसदृतस-
द्व्योमसदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतम् ॥

[illegible] जीवात्मा शुचिषद् देवः परमात्मरूपेण सु-
[illegible] परमार्थरूपेण [illegible] विनियोगाः
त्रिष्टुप् [illegible] रूपे [illegible]
हंसः इत्यस्य हंसो नारायण [illegible]
[illegible]
[illegible] विनियोगः ॥

Digitized By eGangotri

[illegible]

Digitized By eGangotri

यत्कृत्स्नमस्मत्कृत्य तत्कृत्स्नं [illegible] इति [illegible]
वेदस्य [illegible] तथा च स्मृतिः [illegible]
[illegible] इति [illegible]
[illegible] इति [illegible]
[illegible] इति [illegible]
[illegible] इति [illegible]
[illegible] तथा च स्मृतिः [illegible]
[illegible] इति [illegible]
[illegible] इति
[illegible] इति [illegible] तथा च
स्मृतिः [illegible] इति [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] इति
[illegible] इति [illegible]
[illegible] इति [illegible]

Digitized By eGangotri

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

Digitized By eGangotri

ति ॐ सहस्रेण स्पेतत्र भिक्षुसत्त्वत्र्यतयति
ङ्गितलिङ्गवृत्तयः सत्त्व निङ्गितलिङ्गवृत्तयः
सत्त्व निःसत्त्वत्वा सत्यत्रिङ्गितसत्त्वः तत्त्वा स
तयति निश्चयति क्रियाश्च प्रवर्तयतीत्यर्थः
किं च [illegible] विरूपत्वा नपरं प्रकम
यत्रैव क्रियां करयति परम्परेण निरूपे [illegible]

पचयते रक्षुनिरूपे सत्त्वपश्चात्सतः सि
द्धस्य निमिषमनिमीलितन्तु सदिमञ्जु
सुदिमान्नेनपसूति कः मत्तं कोति सत्त्वं
यस्तेजसमर्थचिविश्वभेदे गतिरपि सकल
नं कर्म ॐ सहस्रिकेशात्मक किंस नपरंवयं
भिद्यते यस्य मः परस्य सम्भिरेयसद्य ।
सप्रिरूपस्य सर्यं पुत्रसत्त्व पुत्रि सिद्धेन्द्वन्दवनी
यं प्यतसद्वित्वविचित्रम सप्तद्वत्यर्थः ॥ तति

Digitized By eGangotri

॥ अथ धूप उदकपञ्चनमा ॥ ॐ ॥ ॥

अथ अष्टकं ॥ विष्णुपादोद्भवं मे भूम
शुक्लपद्मं पञ्च अविस्तृतं उत्तु
योनिक्रमात् ञ्च पञ्चपितिवर्ण
॥ विकल्पिते ॥

अथ विष्णुयन्त्रः वन्दितायः
पूजितः अतुक्रमे पेद्वलिः वर्ण अभयदाने
श्व लः श्रम मेमृपगङ्गावेमपिवति विष्णु
तेऽति विष्णुमूर्तिः परमञ्च मेमृमङ्गमले
मममूतमूर वमृघं उत्तमङ्गलतुञ्जतेन वि
यनः मकल विमेष भ्रतमयेन तत्वेवतेन
तिः पूर्वे यमातुम्रपः वउत्तयेनुला मुञ्जा
भूः पिपति शमतेपूपयति वभूति कृ
शुक्लपक्षे मूलमङ्गमर्मः मेयेगतः योगिनां म
मिकल्पेन वर्ममङ्गलगर्माहं भूतीयते ॥ ॥

म०
ली०
३७

अवधूतमुम्रभास्मि श्रीवत्समूत्तवत्

Digitized By eGangotri

सङ्केतस्थलं बुद्धीन्द्रियोपलक्षकः पुनः किंभूतः सद
सुधाख्यं परमसंविदात्मकं कर्मेन्द्रियोपलक्षकः इति समय
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ इति श्री [illegible]
॥ [illegible] ॥

[illegible]
[illegible] ॥

स. ली. क. ᳵ [illegible]

Digitized By eGangotri

[illegible]

[illegible]

Digitized By eGangotri

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]

सं. ली. २० [illegible]
[illegible]

Digitized By eGangotri

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

Digitized By eGangotri

[illegible]
[illegible] ८

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ८ ॥

[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

Digitized By eGangotri

[illegible]

[illegible]
[illegible] ॥ [illegible] १॥

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ १ ॥

Digitized By eGangotri

[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

अस्मत्स्वं स्वस्य तु ये केचिन्नष्टयत्नाः
गावेदन्तान्निर्लोऽस्मदस्मत्सुहृत्स्वस्वरूपः १०

अस्मत्सुहृत्त्वमयत्नस्वरूपतः स्वस्य स्वस्य
यतु न केवलमस्माः किन्तु ये केचिन्नष्टयत्नाः ये के
चन उष्टयत्नाः उत्कृष्टो यत्नः प्रयत्नः स्वस्वरूपस्य
स्वस्वरूपस्य उत्कृष्टस्य अभाः अस्मदेव गावः नान्दिनोऽस्तु
अस्मदेव तु स्वस्वरूपस्य सुहृदः स्वात्माः स्वभावेन
भः उत्कृष्टयत्नाः तु स्वहृदि पिण्डस्तु उत्कृष्टी
तः गावेदन्तु कवः भवन्ति ये स्वरूपस्य क
रूपे यत्किञ्चिद्विरुद्धं विरुद्धत्वमस्मत्सुहृदये
प्रभवे तु भाग प्रमथमोपत्स्वरूपस्येव भवन्ति
त्यभिधीयन्ते ॥ १० ॥

यत्र धर्मस्य कल्पितस्य कल्पयता
भावं किमस्य केवलकल्पस्वरूपस्य ॥ ३।१० ॥

𑆱𑆫𑇀𑆮𑆁 𑆖𑆽𑆠𑆠𑇀 𑆱𑇀𑆮𑆑𑆫𑇀𑆠𑇀𑆠𑆸𑆑𑆼 𑆘𑇀𑆚𑆼𑆪𑆼 𑆱𑇀𑆮𑆤𑆵𑆪𑆂 𑆠𑆢𑆼𑆮 𑆱𑇀𑆦𑆶𑆛𑆪𑆂
𑆪𑆠𑇀𑆱𑇀𑆮𑆫𑆷𑆥𑆁 𑆱𑇀𑆮𑆫𑆷𑆥𑆂 𑆮𑆴𑆢𑆴𑆠𑆮𑆠𑆂 𑆑𑆡𑆁 𑆖 𑆑𑆡𑆁𑆖𑆴𑆠𑇀𑆑𑆁 𑆱𑇀𑆮
𑆑𑆬𑇀𑆥𑆤𑆳𑇅 𑆮𑆴𑆑𑆬𑇀𑆥𑆮𑆠𑆂 𑆮𑆴𑆑𑆬𑇀𑆥𑆪𑆶𑆑𑇀𑆠𑆱𑇀𑆪 𑆨𑆮𑆼𑆢𑇀 𑆨𑇀𑆫𑆳𑆤𑇀𑆠𑆼
𑆑𑆴𑆁 𑆨𑆱𑇀𑆩 𑆨𑆵𑆠𑆂 𑆱𑆠𑇀𑆪𑆱𑇀𑆮𑆫𑆷𑆥𑆱𑇀𑆪 𑆨𑇀𑆫𑆳𑆤𑇀𑆠𑆼 𑆑𑆴𑆁 𑆨𑆵𑆠𑆂 𑆮𑆑𑇀𑆠𑆶
𑆮 𑆑𑆴𑆁 𑆮𑆑𑇀𑆠𑆶𑆁 𑆑𑆴𑆁 𑆨𑆑𑇀𑆠𑆶𑆁 𑆑𑆴𑆁 𑆥𑆑𑇀𑆠𑆶𑆂 𑆥𑆑𑇀𑆫𑆩 𑆑𑆴𑆁 𑆨𑆱𑇀𑆩𑆠𑆼 𑇐𑇐

𑆮𑆑𑇀𑆫𑇀𑆪𑆼 𑆨𑇀𑆫𑆳𑆤𑇀𑆠𑆩 𑆨𑆵𑆠𑇀𑆫 𑆱𑇀𑆮𑆫𑆱𑆱𑇀𑆪 𑆯𑆕𑇀𑆑𑆂
𑆘𑆤𑇀𑆠𑆶𑆱𑇀𑆪 𑆱𑆸𑆰𑇀𑆛𑆱𑇀𑆪𑆽𑆱𑇀𑆮𑆂 𑆥𑆕𑇀𑆑𑆁 𑆱𑆶𑆢𑆴𑆱𑆱𑇀𑆪 𑆠𑆠𑇀 𑇗

𑆥𑇀𑆫𑆮𑆑𑆳𑆯𑇀𑆪𑆑𑆪𑆁 𑆱𑆶𑆱𑇀𑆛𑆼 𑆮𑆴𑆑𑆬𑇀𑆥𑆂 𑆠𑆠𑆂 𑆱𑆶𑆑𑇀𑆑𑆼
𑆥𑆤𑆪𑆫𑆱𑆶 𑆠𑆴𑆨𑆼𑆢 𑆱𑆠𑇀𑆪𑆱𑇀𑆮𑆫𑆷𑆥𑆱𑇀𑆪 𑆨𑇀𑆫𑆳𑆤𑇀𑆠𑆼 𑆮𑆑𑇀𑆫
𑆱𑆶𑆨𑆵𑆠𑆂 𑆮𑆑𑇀𑆫𑆮 𑆮𑆑𑇀𑆠𑆶𑆫𑆱𑇀𑆛𑆂 𑆑𑆴𑆁𑆱𑇀𑆪𑆂 𑆱𑆪𑆩𑆼𑆮 𑆮
𑆑𑇀𑆫 𑆑𑆴𑆩𑆠𑇀 𑆱𑇀𑆮𑆪𑆑𑇀𑆠𑆶𑆥𑆢𑆱𑇀𑆑𑆂 𑇐𑇗 ॥

𑆱𑆤𑇀𑆢𑆶 𑆨𑆳𑆨𑆤𑆨𑆼𑆱𑆠𑇀 𑆱𑇀𑆮𑆽𑆑𑆂 𑆱𑆷𑆢𑆼 𑆱𑆱𑇀𑆪𑆠
𑆩· 𑆨𑆳𑆥𑆱𑆴𑆢𑇀𑆢𑆶𑆱𑇀𑆫𑆴𑆱𑇀𑆮𑆥𑆯𑇀𑆫𑆶𑆪𑆯𑇀𑆫𑆱
𑆛𑆵· ॥𑆪𑆠𑇅𑇐𑇓॥
𑇒𑇒 𑆱𑆠𑇀𑆪𑆱𑇀𑆮𑆫𑆷𑆥𑆱𑇀𑆪 𑆩𑆤𑆱𑆂 𑆨𑆑𑆩𑆠𑆴𑇅 𑆱𑆤𑇀𑆢𑆶𑆨𑆳𑆱𑆠𑆂 𑇅

Digitized By eGangotri

सर्वैः सत्त्वैः स्वदः स्तुतः स्वपक्षाग्निः स्वस्पर्शात तन्तु
स्तस्पर्शात स्वहेः स्वदसन्तुव यदिहमनस्सुक्षः सेह ७ स
न्तु तितितिस स्वक्षमः स्वहेत स्वाक्षित्तुसादिभि पक्षे
मनस्सुक्षः सेहेदुः सन्तुमः पक्षीनमहा तिक्रमः इति
वैपरीत्यकथनं सुतिथिवैवक्तृकः ॥ ७३ ॥

नहि सुधीमत्तु विक्रे सीदेदेन्मसमवतत
पक्षाभिक्षिमः सेहे तथा लोकसकलं
यशः ॥ ७२ ॥

नहि नाशितुं विक्रे सुकमं वक्तृव सी
स्तुः समुकता देः स्वन्तः ससवतत ससठवता पक्षे
पक्षस्वयता क्षसिस्वसवतत सेहक्ष्लता क्षिमः लो
कस्केवसतधर्मनिपिलसुवास्वक्षसाक्षि इत्लोकं
सकलं यशः संभुवना ॥ ७२ ॥

सप्तसु सन्तुतिपय भिस्सयसाभिपक्षतः
सेवयहृदुःतत्रन स्ववपत्तुनसंपस्तमा ॥ ०५

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

Digitized By eGangotri

[illegible]

𑇆𑆨𑆮𑆂 𑆯𑆴𑆮𑆨𑆑𑇀𑆠𑆱𑇀𑆠𑇀𑆮𑆩𑆱𑇀𑆠𑆶𑇆𑇑𑇐𑇆

𑆇𑆠 𑆲𑆼𑆨𑆮𑆂 𑆲𑆼 𑆩𑆩 𑆯𑆴𑆮𑆨𑆑𑇀𑆠𑆱𑇀𑆠𑇀𑆮𑆩𑆱𑇀𑆠𑆶 𑆯𑆴𑆮𑆂𑆨𑆑𑇀𑆠𑆼
[illegible] 𑆯𑆴𑆮𑆨𑆑𑇀𑆠𑆠𑇀𑆮𑆁 [illegible] 𑆑𑆴𑆁𑆪𑆠 [illegible]
[illegible] 𑆮𑆴𑆰𑆪𑆼𑆰𑆶 [illegible]

𑆟𑆳𑆨𑆴𑆭𑇀𑆪𑆳𑆥𑇀𑆪𑆳𑆤𑇀𑆠𑆼 𑆩𑆢𑇀𑆢𑆑𑆭𑆴𑆱𑆵𑆤𑆁 𑆠𑆱𑇀𑆩𑆳𑆠𑇀 𑆰𑆳𑆤𑇀𑆠𑆫𑆱𑆸𑆠𑆳𑆠𑇀 𑆤 𑆱𑆸𑆢𑆂
𑆠𑆰𑇀𑆪 𑆩𑆣𑇀𑆪𑆼 𑆠𑆠𑇀𑆫 𑆩𑆤𑆰𑇀𑆰𑆷𑆑𑇀𑆯𑇀𑆩𑆁 𑆠𑆡𑆽𑆭𑆼𑆢𑆩𑆥𑆴 𑆰𑆷𑆑𑇀𑆯𑇀𑆩𑆭𑆴𑆯𑆪𑆳𑆨𑆴-
𑆥𑆑𑆠𑇀𑆭𑆳𑆠𑇀 𑆠𑆢𑇀𑆭𑇀𑆪𑆳𑆥𑇀𑆪𑆰𑇀𑆩𑆳𑆠𑇀 𑆩𑆤𑆂 𑆑𑆴𑆁𑆨𑆷𑆠𑆁 𑆢𑆽𑆭𑆁 𑆢𑆼𑆭-
𑆰𑇀𑆭𑆫𑆷𑆥𑆁 𑆥𑆶𑆤𑆂 𑆑𑆴𑆁𑆨𑆷𑆠𑆁 𑆘𑇀𑆪𑆾𑆠𑆴𑆯𑆳𑆩𑆨𑆴𑆭𑇀𑆪𑆳𑆥𑇀𑆪𑆳𑆤𑇀𑆠𑆼 𑆩𑆱𑆠𑇀 𑆍𑆑𑆩-
𑆢𑇀𑆭𑆴𑆠𑆵𑆪𑆁 𑆘𑇀𑆪𑆾𑆠𑆴𑆫𑆴𑆤𑇀𑆢𑇀𑆫𑆴𑆪𑆁 𑆰𑇀𑆪𑆳𑆥𑇀𑆪𑆨𑆴𑆱𑆸𑆢𑆂 𑆠𑆰𑇀𑆩𑆴𑆤𑇀𑆤𑆑𑇀𑆯𑆶𑆫𑆳𑆢𑆑-
𑆢𑆳𑆤𑇀𑆠𑆼 𑆩𑆴𑆠𑆠𑇀𑆭𑆂 𑆑𑇀𑆫𑆩𑆩𑆨𑆴𑆭𑇀𑆪𑆳𑆥𑇀𑆪𑆳𑆤𑇀𑆠𑆼 𑆩𑆱𑆼𑆤𑇀𑆢𑇀𑆫𑆁 …
𑆠𑆷𑆫𑇀𑆭𑆢𑆴𑆠 𑆭𑆴𑆭𑆢𑆴𑆠 𑆭𑆴𑆯𑆪𑆩𑆥𑇀𑆪𑆤𑇀𑆠𑆼 𑆩𑆴𑆱𑆸𑆢𑆂 ॰

𑆪𑆼𑆤𑆑𑆫𑇀𑆩𑆳𑆟𑇀𑆪𑆥𑆰𑆾 𑆩𑆤𑆵𑆯𑆴𑆟𑆾 𑇆 𑆪𑆘𑇀𑆚𑆼
𑆑𑆸𑆟𑇀𑆭𑆤𑇀𑆠𑆴 𑆭𑆴𑆢𑆡𑆼𑆯𑆶 𑆣𑆵𑆫𑆳𑆂 𑇆 𑆪𑆢𑆥𑆷𑆫𑇀𑆭𑆁 𑆪𑆑𑇀𑆯𑆩-
𑆤𑇀𑆠𑆂 𑆥𑇀𑆫𑆘𑆳𑆤𑆳𑆁 𑆠𑆤𑇀𑆩𑆼 𑆩𑆤𑆂 𑆮𑆴𑆭𑆰𑆁𑆑𑆬𑇀𑆥𑆩𑆰𑇀𑆠𑆶 𑇆

𑆪𑆼𑆤 𑆩𑆤𑆰𑆳 𑆃𑆥𑆰𑆂 𑆑𑆫𑇀𑆩𑆴𑆟𑆂 𑆩𑆤𑆵𑆯𑆴𑆟𑆂 𑆪-
𑆘𑇀𑆚𑆼 𑆑𑆫𑇀𑆩𑆳𑆟𑆴 𑆑𑆸𑆟𑇀𑆭𑆤𑇀𑆠𑆴 𑆑𑆶𑆫𑇀𑆭𑆤𑇀𑆠𑆴 𑆃𑆥𑆰𑆂 𑆑𑆫𑇀𑆩𑆟𑆳𑆁 𑆩𑆤𑆵-
𑆯𑆴𑆟𑆂 𑆑𑆴𑆁𑆨𑆷𑆠𑆳𑆂 𑆭𑆴𑆢𑆡𑆼𑆯𑆶 𑆪𑆘𑇀𑆚𑆼𑆯𑆶 𑆪𑆘𑇀𑆚𑆩𑆟𑇀𑆝𑆥𑆼𑆯𑆶 𑆭-
𑆣𑆵𑆫𑆳𑆂 𑆥𑆟𑇀𑆝𑆴𑆠𑆳𑆂 𑆩𑆤 𑆑𑆴𑆁𑆨𑆷𑆠𑆁 𑆃𑆥𑆷𑆫𑇀𑆭𑆁 𑆤 𑆭𑆴𑆢𑇀𑆪𑆠𑆼 𑆥𑆷𑆫𑇀𑆭𑆁 𑆪𑆰𑇀𑆪
𑆪𑆠𑇀𑆥𑆷𑆫𑇀𑆭𑆩𑆴𑆱𑆸𑆢𑆂 𑆥𑆶𑆤𑆂 𑆑𑆴𑆁𑆨𑆷𑆠𑆁 𑆪𑆑𑇀𑆯𑆁 𑆥𑆷𑆘𑇀𑆪𑆁

𑆥𑇀𑆫𑆱𑆤𑇀𑆤𑆩𑆠𑇀𑆠𑆶𑆂 𑆱𑆠𑇀𑆠𑆶𑆮𑆠𑇀𑆫𑆴 𑇄 𑆤𑆩𑆂 𑆯𑆴𑆮𑆳𑆪 𑇆 𑇓 𑇆 𑇔 𑇆

𑆪𑆱𑇀𑆪 𑆯𑇀𑆫𑆶𑆠𑇀𑆮𑆳 𑆤𑆩𑆠𑆼 𑆱𑆼𑆠𑆼 𑆥𑇀𑆫𑆳𑆠𑆴𑆱𑇀𑆩 𑆪𑆱𑇀𑆪𑆼𑆠𑆴 𑆮𑆠𑇀𑆠
𑆱𑆩𑆠𑆼 𑆥𑆶𑆱𑇀𑆪 𑆪𑆱𑇀𑆩𑆳𑆢𑇀 𑆮𑆢𑆼𑆠 𑆑𑆴𑆚𑇀𑆖𑆤
𑆥𑇀𑆫𑆑𑇀𑆫𑆴𑆪𑆠𑆼 𑇆 𑇄 𑆤𑆩𑆂 𑇆 𑇗 𑇆

𑆪𑆱𑇀𑆩𑆽 𑆤𑆩𑆂 𑆥𑆱𑇀𑆠𑆶𑆤𑆁 𑆥𑆫𑆱𑇀𑆩𑆶𑆱𑇀𑆠𑆶𑆤𑆼 𑆠𑆠𑇀𑆩𑆱𑇀𑆩𑆪𑆼𑆪𑆠𑇀 𑆱𑆼𑆠𑆂 𑆱𑆴𑆠𑆼𑆱𑆼𑆠𑆤𑆪𑆂 𑆠𑆥𑆬𑆠𑇀𑆮𑆼𑆂 𑆢𑆼𑆠𑆂 𑆥𑇀𑆫𑆳𑆠𑆴𑆱𑇀𑆩𑆪𑆱𑇀𑆪 𑆱𑆶𑆂 𑆯𑆶𑆱𑇀𑆪𑆼 𑆱𑆩𑆼𑆠𑆼𑆠𑆴𑆂 𑆱𑆶𑆥𑆢𑆼𑆠𑆶𑆁 𑆥𑆶𑆑 𑆱𑆑𑆁 𑆑𑆴𑆁 𑆱 𑆪𑆱𑇀𑆩𑆳𑆠𑇀 𑆮𑆢𑆼𑆠 𑆑𑆴𑆚𑇀𑆖𑆤 𑆑𑇀𑆫𑆴𑆪𑆠𑆼 𑆑𑆼𑆤𑆳𑆥𑆴 𑆠𑆴𑆱𑇀𑆪𑆼𑆰𑆂 𑇄 𑆤𑆩𑆂 𑆯𑆴𑆮𑆳𑆪𑆼𑆠𑇀𑆪𑆫𑇀𑆠𑆂 𑇗 𑇆

𑆪𑆼𑆤𑆼𑆢𑆁 𑆑𑇀𑆫𑆶𑆠𑆁 𑆨𑆶𑆮𑆤𑆁 𑆖 𑆮𑆴𑆯𑇀𑆮𑆁 𑆥𑆴𑆓𑆢𑆵𑆠
𑆱𑆩𑆱𑇀𑆠𑆼𑆤 𑆱𑆖𑆫𑆳𑆖𑆫𑆩𑇀 𑆪𑆼𑆤 𑆪𑆱𑇀𑆩𑆶 𑆪𑆠𑆼𑆱
𑆥𑆶𑆢𑆼𑆮 𑇆 𑇄 𑆤𑆩𑆂 𑇆 𑇘

𑆪𑆼𑆤 𑆢𑆁 𑆑𑆮𑆶𑆱𑆩𑆤𑆼 𑆑𑇀𑆫𑆶𑆱𑆩𑆵𑆠𑆼 𑆖𑆮𑆴𑆯𑇀𑆮𑆁 𑆑𑆶𑆮𑆴𑆱𑆮𑆑𑆶𑆮𑆤𑆼 𑆥𑆫𑆴𑆓𑆢𑆵𑆠𑆱𑆑𑇀𑆫𑆶𑆠𑆼 𑆪𑆼𑆤 𑆑𑆴𑆁 𑆑𑇀𑆫𑆼𑆠𑆼𑆤 𑆱𑆱𑇀𑆠𑆼𑆤 𑆤𑆴𑆯𑇀𑆯𑆼𑆤𑆱𑆶𑆥𑆢𑆼𑆠𑆤𑆳𑆮 𑆪𑆼𑆤 𑆱𑆶𑆥𑆢𑆼𑆢 𑆪𑆱𑇀𑆩𑆳𑆠𑇀 𑆱𑆫𑇀𑆮𑆱𑆩𑆶𑆪𑆠𑆼 𑆮𑆴𑆱𑆶𑆢𑆠𑆼 𑇆 𑇘 𑇆

[illegible]
[illegible]
॥ तस्मै [illegible] नमः ॥५॥

[illegible]
[illegible]
[illegible] ।
[illegible]
॥ [illegible] नमः ॥६॥

[illegible]
[illegible]
[illegible] नमः ॥७॥

[illegible]
[illegible]
भ· [illegible]
ली· [illegible]
२१ [illegible]

Digitized By eGangotri

𑆥𑆶𑆁𑆲𑆷𑆑𑆴𑆥𑆶𑆠𑆴𑆨𑇀𑆫𑆶𑆠𑆨𑆳 𑆓𑆽𑆮𑆱𑇀𑆠𑆶𑆤𑆼𑆢𑇀𑆝𑆼𑆠𑆼𑆂𑆪𑆠𑆳 𑆱𑆳𑆬𑆴𑆫𑆁 𑆥𑆷
𑆩𑆁𑆝𑆬𑆴𑆮𑆴𑆨𑆶𑆁𑆝𑆬𑆩𑆳𑆬𑆴𑆮𑆼𑆓𑆮𑆠𑆳 𑆠𑆼𑆤𑆩𑆤𑆂

𑆱𑆶𑆣𑆪𑆳𑆥𑇀𑆬𑆶𑆠𑆳𑆨𑆴𑆤𑇀𑆤𑆩𑆟𑇀𑆝𑆬𑆼𑆥𑆫𑆩𑆼𑆯𑇀𑆮𑆫𑆱𑇀𑆪𑆽𑆮
𑆢𑆴𑆮𑇀𑆪𑆫𑆷𑆥𑆂 𑆥𑆫𑆩𑆂 𑆱𑆶𑆣𑆪𑆳𑆥𑇀𑆬𑆶𑆠𑆳𑆨𑆴𑆤𑇀𑆤𑆩
𑆟𑇀𑆝𑆬𑆼𑆥𑆫𑆩𑆼𑆯𑆩𑆼𑆮𑆨𑆪𑆼𑆪𑆼𑆱𑆳𑆑𑇀𑆱𑆴𑆤𑆁 𑆑𑆫𑆶
𑇅 𑆤𑆩𑆂 𑇆

𑆱𑆶𑆣𑆪𑆳𑆥𑇀𑆬𑆶𑆠𑆳𑆨𑆴𑆤𑇀𑆤𑆩𑆟𑇀𑆝𑆬𑆼 𑆩𑆣𑇀𑆪𑆼 𑆥𑆫𑆩𑆼𑆯𑆼𑆤𑆽𑆮 𑆱𑇀𑆮𑆫𑆷𑆥𑆂 𑆢𑆴
𑆮𑇀𑆪𑆼 𑆢𑆴𑆮𑇀𑆪𑆓𑆤𑇀𑆣𑆱𑇀𑆮𑆫𑆷𑆥𑆂 𑆠𑆨𑆴𑆤𑇀𑆤𑆼𑆮 𑆩𑆟𑇀𑆝𑆬𑆼 𑆱𑆶𑆢𑆩
𑆟𑇀𑆝𑆬𑆼𑆪𑆩𑆼𑆮𑆑𑆮𑆠𑆴 𑆨𑆪𑆼𑆪𑆼𑆱𑆳𑆑𑇀𑆱𑆴𑆤𑆁 𑆩𑆠𑇀𑆑𑆶𑆩𑆬𑆼𑆤𑆁 𑆥
𑆫𑆩𑆂 𑆢𑆴𑆮𑇀𑆪𑆫𑆷𑆥𑆴𑆠𑆴 𑆩𑆑𑆳𑆫𑆬𑆼𑆥𑆂 𑆱𑇀𑆥𑆶𑆫𑆤𑇀𑆩𑆂 𑆢𑆴𑆮𑇀𑆪𑆫𑆷𑆥𑆪𑆠𑆴 𑇆

𑆪𑆠𑆑𑆳𑆪𑆳𑆥𑇀𑆫𑆨𑆶𑆤𑆳𑆢𑆼𑆠𑆱𑆬𑆮𑆑𑇀𑆫𑆴𑆲
𑆬𑆩𑆤𑆂 𑆩𑆢𑆴𑆫𑆳𑆥𑇀𑆫𑆨𑆷𑆠 𑆩𑆩𑆩𑆯𑆼
𑆮𑆼𑆢𑆴𑆠𑆳𑆂 𑆥𑇀𑆫𑆢𑆼𑆮𑆴𑆥𑆑𑇀𑆯𑆤𑇀𑆤𑆩𑆥𑆤𑆠
𑆪𑆣𑇀𑆮𑆑𑆮𑆳𑆩𑆴𑆣𑆳𑆤𑆩𑆥𑆢𑆩𑆵𑆓𑇀𑆫𑆠𑆪
𑇅 𑆮𑆴𑆲𑆫𑆥𑆪𑆮𑆽 𑆤𑆩𑆼𑆤𑆩𑆂 𑇆 𑇓 𑇆

Digitized By eGangotri

Digitized By eGangotri

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

Digitized By eGangotri

सुमनं वृक्षपत्रं वृक्षनविमुक्तग्रे वृक्षात्फलमा
वृक्षवेनगान्तुष्टं वृक्षकम भमाणिनः सुवक्षे सु
वणेमरय घञ्जं घोत्तव मेनिवत्तेस्मधृष्टभनभ
भरूतघमस्तूद्भुधकाले घेवसभधुस्मभष्ट वन्नुव
सुमित [illegible] कुमव [illegible]
स्तनभा॥ उत्तिष्ठिश्रिष्ठिन्तु नमस्तुदेग ॥ नमो वृक्षाले न
मे स्वभुवाये नमः पशवे नमो बभ्रणिष्ठे नमो वसे
नमो वसमृद्धये नमो विष्णवे वरदो दीले भि उहे
भभो वमेवत्ते न भाद्मिङ्कं भाधुह्नं भलेकत्तभाप्रो
यात्र्वविष्णु सुहृदयभपीतं ॥ ८ ॥ नमो वृक्षाले उट
मिहः मेवत्ते नमो सु वरदो पर वृक्षाले विष्णुवेट
पकय स्वंदनमः नाले भिकोभियः क्षितेतुमः वि
ष्णुना निहनिहत्तुनी स्वं उभमसच्चुषृ के उभेसु
हृदयभपीत भविधुः स्तुभ भोवमेवत्ते न भाद्मिङ्कं
भभानेसुद्देभाधुहं भभानक्रूपत्त भेकं उहत्तः भलेक
त्तभलेक्षुमेभिः भद्देकभिमिल्लेकेव भंभाभीधूनि
कूटवद्विष्णुभपि भलेकुमक्तुनेवभाभीधृसव्रकु उहृत्ता

भ॰
टी॰
१७

[illegible] ॥ ॥

[illegible] विष्णु [illegible]

[illegible]

॥ ३॥ ॥

[illegible] ऋषि [illegible]

[illegible] गायत्री विष्णुर्देवता [illegible]

[illegible]

[illegible] गायत्री [illegible] विष्णुर्देवता [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] विष्णुर्देवता [illegible]

[illegible]

॥ [illegible] ॥ ॥

Digitized By eGangotri

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
अग्निरृषिः पवमानः ॥ पाञ्चजन्यः पुरो-
हितः ॥ तमीमहे महागयम् ॥ ॥

अग्निः ऋषिः [illegible] पवमानः [illegible] पाञ्चजन्यः [illegible]
[illegible] पुरोहितः [illegible]
[illegible]
[illegible]
तमीमहे [illegible] महागयम् ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
॥ [illegible] ॥

[illegible]
[illegible]

Digitized By eGangotri

...ः पितरः वयं [illegible] अभिगृणीमहि [illegible] नमः [illegible]
नमः के पितरः [illegible]
[illegible] किं [illegible]
[illegible] पितरः [illegible]
[illegible]
[illegible] पितरः [illegible]
[illegible] किं [illegible]
[illegible]
[illegible] अभिगृणीमहि [illegible]
[illegible] वयं किं [illegible]
[illegible] किं [illegible] वयं [illegible]
[illegible] अभिगृणीमहि [illegible] नमः [illegible]
[illegible] किं [illegible]
[illegible] किं [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥

Digitized By eGangotri

कव्यवाडनलः स्वधानमस्पृष्टमा ॐ
ह्रीं ॥ सोमपाः पितृदेवताः पितृभ्यो नमः
स्वधा नमः स्वधानमस्तु सदा नित्यमेव
शान्तये ॥ अथ पितृभ्यो नमः ॥ ॐ
सोमपाः उर्जस्वन्तः पितरः सोमपाः
सर्वे पितृभ्यो नमः पितृदेवताः ॥

सर्वेभ्यः पितृभ्यो नमः लोकत्रये पितरः पृथिवीलोकस्य
वसवः ये पितरः सर्वे पितृलोकवासिनः पितृदेव
स्वधायाः पितरः स्वधायाः स्वधायाः
पितृभ्यः स्वधा नमः सर्वे पितृभ्यो नमः
पितृभ्यः स्वधायाः स्वधाय पितरः
पार्वणे सोमपाः सोमपाः पितरः
वै पितृलोकवासिनः पितरः पितृलोकस्य
म. तेः स्वधा पितृभ्यः विश्वेदेवाः
ली. मः सर्वे पितृभ्यः ये पितरः पितृलोकस्य ।
५० सुपितरः पितृलोकस्य विश्वेदेवाः स्वधा नमः ॐ

Digitized By eGangotri

ति येऽस्मिल्लोके परस्मिंश्च परलोके सम्भूय परस्मीयुः
परतः सद्गीयमानास्तः प्रनः कर्मवशेन परस्मिन्नः स
म्पन्नः तस्मात्त्वं हृतः तस्मात्तीति ढकः नढकः स्वध
कः दिमदादिः स्वविध्मित्रमन्त्रनतीव प्रत्यूः स
हस्तानः स्मृत्यतनिश्चः यस्तु निश्चवतेपि विमिश्चस
न्नश्चन्नं गम्भस्तुस्तुतेनकस्य ये सम्भृतीयः पित्र
सुम्नाति वन्नारस्तुस्मिंहन्नं गातिपरपुः तेदवेशु स्तुक
नेशु स्तुगमस्तुनः सम्भानो सवतु पलयन्तु ॥

सोमिमेनः पितरो येन वयं सधव
ते हृताः सेभूसः तेषं वेदा सुसेत
दीस्तुयनसपितृहेसु सनसः स्तुस ॥

वयं तेषं पितृॄन् सम्भिषयेकल्प सतिस्व स्वहिहः
दीस्तुयनं यस्तु सस्प्रस्मिं स्वपिम हृदेवत्रनीये
सेसनस्मृकल्प सनामिस्नस ढवेस तेकेयेनः स्व
सकं पितृः सोमिमः सोमिरुधिः तस्मृपहरि

Digitized By eGangotri

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

Digitized By eGangotri

Digitized By eGangotri

॥ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधा
यिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा न
॥ मः ॥ मन्त्रः ॥

ये चेह पितरो ये च नेह यांश्च
विद्म यां उ च न प्रविद्म त्वं वेत्थ यति ते जात
वेदः स्वधाभिर्यज्ञं सुकृतं जुषस्व ॥

हे जातवेदः देवकृत पितॄन् त्वं वेत्थ स्वनाभि यजमाने
स्वधाभिः पितृसम्बन्धिभिः हविर्भिः सुकृतं पितृयज्ञं
इह लोके च सुखमेव ये च नेह न सन्ति यस्मिन्
नो विद्म यांश्च न विद्मः न प्रज्ञानीमः
उक्ताः परमपुरुषे पितॄन् किं बहुना यति सर्वा
न्‌ कृते यन्ति मः यदीनां सुखीनां निरन्तरेभिः
कर्मकाण्ड निष्कल्मषा नानाविधैः पि
तृमन्त्रः स्वधाकारेण स्वधा नमः स्वधा ॥३॥ ॥

अग्निष्वात्ता अनग्निष्वात्ता मध्ये दिवः

[illegible] ॥३॥

[illegible]

Digitized By eGangotri

[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] १
[illegible] ॥ नमो वः [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ॥ नमो वः पितरो रसाय नमो वः
पितरः शोषाय नमो वः पितरो जीवाय
[illegible] नमो वः पितरो बलाय
नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो म
न्यवे नमो वः पितरः [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
॥ [illegible] ॥
नमो वः पितरो रसाय [illegible] पितरः
[illegible]
[illegible]

Digitized By eGangotri

ण्वंवकृमत्ं अपिमत्तृश्रयः मेधाय मेधश्
यन्ताय शीघ्र्यायनमः सुसृति दिशीष्ये तथाय:
जीवाय जीवनकृताय वदृष्टेनमः भुवये भुव
नै मातर भुवनैपितृ भतं उत्तमृतिः मातफिश्
यमेतान्निरुवति ध्येताय विधमायुः विधमेदिदे
मतुः प्रा नमीतधमृतभूतं मदवे मतृः देवः
कृतवदि मिमिः तथणीः मदातयतः नमोवः
पितरो नमोवः मृष्टमेक्रध मभंजमतृत मातश्च
णनमः सुधृतं पितामही प्रपितामही मातम
दत्तृदि मवेतय उदश उिनमेमेहः मु
दयधिहः भुवपिहहः सुधक्रमुमपदत्त स्व
मनं ममममं मनातृप्त ३ शुभमस्तु ६
इति श्रीपामनश्रु लीकाविधिः समाप्तम् ॥ तत्
॥ पशुभमप्रमभतत् ॥

Digitized By eGangotri

Digitized By eGangotri

Digitized By eGangotri

Digitized By eGangotri

Digitized By eGangotri